Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 20

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

20 रमाज़न 1441 हिजरी कमरी 14 हिजरत 1399 हिजरी शमसी 14 मई 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

अपनी हिम्मत और कोशिश पर गर्व मत करो और मत समझो कि यह समफलता हमारी किसी योग्यता और मेहनत का नतीजा है बल्कि यह सोचो कि इस रहीम ख़ुदा ने जो कभी किसी की सच्ची मेहनत को नष्ट नहीं करता है। हमारी मेहनत को सफल किया

मेरा ईमान यही है कि अगर इन्सान दुनिया में हर किस्म के अपमान और सख़्ती से बचना चाहे तो उस के लिए एक ही राह है कि मुत्तक़ी बन जाए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

15 जनवरी 1898 ई

को ख़्वाजा कमाल उद्दीन साहिब बी ए, के एल एल बी के परीक्षा में कामयाब होने की ख़बर आई। फ़ज्र की नमाज़ के बाद हज़रत अक़दस इमाम अलैहिस्सलाम बैठ गए और निम्नलिखित संक्षिप्त सी तक़रीर फ़रमाई:

दुनयावी सफलताएं और ख़ुशियां स्थायी नहीं। इन्सान को हर किस्म की सफलता के अवसर पर एक ख़ुशी होती है। क़ुरआन शरीफ़ से तीन किस्म की ख़ुशियां, लहू, लअब (व्यर्थ), तफ़ाख़ुर मालूम होती हैं।लहू में खाने पीने की चाज़े शामिल हैं और लअब में शादी इत्यादि की ख़ुशियां और तफ़ाख़ुर में माल इत्यादि की ख़ुशियां। ये तीन किस्म की ख़ुशियां हैं इन से बाहर कोई ख़ुशी नहीं है। मगर याद रखो कि कामयाबियां और ये ख़ुशियां स्थायी नहीं होती हैं बल्कि उनके साथ दिल लगाओगे तो सख़्त नुकसान होगा और धीरे- धीरे एक वक़्त आता जाता है कि इन ख़ुशियों का ज़माना कड़वाहट से बदलने लगता है।

दुनिया की सफलताएं परीक्षा से ख़ाली नहीं होती हैं। क़ुरआन शरीफ़ आया है

خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ

(अल-मलिक:3) अर्थात मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि हम तुम्हें आज़माऐं। सफलता और असफलता भी ज़िन्दगी और मौत का सवाल होती है। कामयाबी एक किस्म की ज़िन्दगी होती है। जब किसी को अपने सफल होने की ख़बर पहुँचती है तो इस में जान पड़ जाती है और मानो नई ज़िन्दगी मिलती है और अगर असफलता की ख़बर आ जाए तो ज़िन्दा ही मर जाता है और कई बार बहुत से कमज़ोर दिल आदमी हलाक भी हो जाते हैं।

यह बात भी याद रखनी चाहिए कि आम ज़िन्दगी और मौत तो एक आसान बात है लेकिन जहन्नुमी ज़िन्दगी और मौत बहुत कठोर चीज़ है। नेक आदमी असफलता के बाद सफल हो कर और भी नेक हो जाता है और ख़ुदा तआला पर ईमान बढ़ जाता है। इस को एक मज़ा आता है जब वह ग़ौर करता है कि मेरा ख़ुदा कैसा है। और दुनिया की सफलता ख़ुदा तआला को पहचानने का एक बहाना हो जाता है। ऐसे आदमीयों के लिए यह सांसारिक सफलताएं वास्तिवक कामयाबी का (जिसको इस्लाम की परिभाषा में फ़लाह कहते हैं)एक माध्यम हो जाती हैं। मैं तुम्हें सच सच कहता हूँ कि सच्ची ख़ुशहाली, सच्ची राहत दुनिया और दुनिया की चीज़ों में हरगिज़ नहीं है। हक़ीक़त यही है कि दुनिया के समस्त विभाग देखकर भी इन्सान सच्चा और स्थायी आन्नद प्राप्त नहीं कर सकता। तुम देखते हो के दौलतमंद अधिक माल तथा दौलत रखने वाले हर समय खुश रहते हैं मगर उनकी हालत ज़रब अर्थात खुजली के मरीज़ जैसी होती है। जिसको खुजलाने से राहत मिलती है लेकिन इस ख़ारिश का आख़िरी नतीजा क्या होताहै? यही कि ख़ून निकल आता है। अत: इन दुनयावी और अस्थायी सफलताओं पर इतना ख़ुश मत हो कि वास्तिवक कामयाबी से दूर चले जाओ बल्कि उन सफलताओं को ख़ुदा तआला को पहचानने का एक माध्यम क़रार दो। अपनी हिम्मत और कोशिश पर गर्व मत करो और मत समझो कि यह समफलता हमारी किसी योग्यता और मेहनत का नतीजा है बल्कि यह सोचो कि इस रहीम ख़ुदा ने जो कभी किसी की सच्ची मेहनत को नष्ट नहीं करता है। हमारी मेहनत को सफल किया वर्ना क्या तुम नहीं देखते कि सैंकड़ों छात्र आए दिन परीक्षाओं में फ़ेल होते हैं। क्या वे सब के सब मेहनत न करने वाले और बिलकुल शरारती और बलीद ही होते हैं? नहीं बल्कि कई ऐसे नेक और होशियार होते हैं कि पास होने वालों में से अक्सर के मुक़ाबला में होशियार होते हैं। इसलिए वाजिब और ज़रूरी है कि हर सफलता पर मोमिन ख़ुदा तआला के हुज़ूर शुक्र के सिज्दे करे कि उसने मेहनत को नष्ट होने नहीं दिया। इस शुक्र का नतीजा यह होगा कि अल्लाह तआला से मुहब्बत बढ़ेगी और ईमान में तरक़्क़ी होगी और न सिर्फ यही बल्कि और भी सफलताएं मिलेंगी क्योंकि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि अगर तुम मेरी नेअमतों का शुक्र करोगे तो अलबत्ता मैं नेअमतों को ज़्यादा करूँगा और अगर नेअमत का इन्कार करोगे तो याद रखो सख़्त अज़ाब में गिरफ़्तार होगे।

मोमिन और काफ़िर की सफलता में फ़र्क़

इस नियम को हमेशा समक्ष रखो। मोमिन का काम यह है कि वह किसी सफलता पर जो उसे दी जाती है। शर्मिंदा होता है और ख़ुदा की प्रशंसा करता है कि उसने अपना फ़ज़ल किया और इस तरह पर वह क़दम आगे रखता है और हर परीक्षा में दृढ़ रह कर इनाम पाता है। ज़ाहिर एक हिन्दू और मोमिन की सफलता एक रंग में समानता होती है लेकिन याद रखो कि काफ़िर की कामयाबी अपमान की राह है और मोमिन की कामयाबी से इस के लिए नेअमतों का दरवाज़ा खुलता है। काफ़िर की कामयाबी इस लिए अपमान की तरफ़ ले जाती है कि वह ख़ुदा की तरफ़ रुजू नहीं करता बल्कि अपनी मेहनत,अक्ल और योग्यता को ख़ुदा बना लेता है मगर मोमिन ख़ुदा की तरफ़ रुजू कर के ख़ुदा से एक नया परिचय पैदा करता है और इस तरह पर हर एक कामयाबी के बाद उस का ख़ुदा से एक नया मामला शुरू हो जाता है और इस में तबदीली लगती है। اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا (अन्नहल 131)ख़ुदा उनके साथ होता है जो मुत्तक़ी होते हैं। याद रखना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ में तक़्वा का शब्द बहुत बार आया है। इस के अर्थ पहले शब्द से किए जाते हैं। यहां मुइ का शब्द आया है अर्थात जो ख़ुदा को मुक़द्दम समझता है ख़ुदा उस को मुक़द्दम रखता है और दुनिया में हर किस्म के अपमानों से बचा लेता है। मेरा ईमान यही है कि अगर इन्सान दुनिया में हर किस्म के अपमान और सख़्ती से बचना चाहे तो उस के लिए एक ही राह है कि मुत्तक़ी बन जाए। फिर उस को किसी चीज़ की कमी नहीं। अत: मोमिन की सफलताएं उस को आगे ले जाती है ओर वह वहीं ही नहीं ठहर जाता।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 135 प्रकाशन 2018 कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-3)

हुज़ूर अनवर के ख़िताब के एक-एक शब्द ने मेरे दिल पर प्रभाव किया है।

मैं अपने आपको बड़ा ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ कि यहां आ कर हुज़ूर अनवर के अनुकरण में नमाज़ें अदा कीं और इस रुहानी माहौल से लाभ उठाया।

जलसों में शामिल हो कर ईमान को बड़ी मज़बूती मिलती है, जब भी समय के ख़लीफ़ा का दर्शन होता है तो दिल को एक सुकून और इतमीनान प्राप्त होता है

इस जलसा में शामिल हो कर मैं ने ख़िलाफ़त की बरकतों को समेटा है, मुझे हुज़ूर अनवर के ख़त्बों को सुनने का अवसर मिला हुज़ूर अनवर की नसीहतें सुनें, हुज़ूर अनवर के बरकतों वाले वजूद से बरकत लेने की हर एक की इच्छा होती है, मैं ने भी जलसा में शामिल हो कर इस बरकत से हिस्सा लिया है।

मुझे हुज़ूर अनवर के दर्शन की, हुज़ूर अनवर के सानिध्य का सौभाग्य नसीब हुआ, मैंने हुज़ूर के अनुकरण में नमाज़ें अदा कीं

मेरा सम्बन्ध एक अरब देश से है, मैं बहुत दुआ करता हूँ कि हुज़ूर की इच्छा के अनुसार अरब लोगों तक भी जमाअत अहमदिया का अमन वाला पैग़ाम पहुंचे और वे भी ख़िलाफ़त की नेअमत से लाभान्वित हो सकें और जो सुकून मुझे जमाअत में शामिल हो कर प्राप्त हुआ है समस्त अरब देशों के लोग भी इस सुकून को पाएं आमीन

हुज़ूर अनवर ने लज्ना में जो ख़िताब फ़रमाया है इस से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है, हुज़ूर अनवर ने अपने ख़िताब में जो नसीहतें फ़रमाई हैं हमारे लिए ज़रूरी है कि हम उन पर अनुकरण करें

जलसा सालाना में शामिल होने वाले नौ मुबाईन के ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं

जितने भी मुबल्लग़ीन हैं सब ख़ुद्दाम को ध्यान दिलाएँ कि नमाज़ों पर आया करें, ख़ुद्दाम से सम्बन्ध बढ़ाईं और उन्हें लगभग लाएं

नैशनल मज्लिस आमला ख़ुद्दामुल अहमदिया हॉलैंड की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग और हुज़ूर अनवर की हिदायतें।

असल मक़सद यह है कि सज़ा पाने वाले शख़्स को एहसास दिलाया जाए कि इस ने ग़लती की है।

सज़ा बहरहाल इसलिए दी जाती है कि बेहतरी हो, क़रीबी रिश्तेदार जैसे माँ बाप, बहन भाई सम्बन्ध रख सकते हैं ताकि इस्लाह हो चाची, मामी, फूफी न रखे ताकि ग़लती का एहसास हो और उसको समझाएँ कि तुम ने ग़लती की है, अब यह तो ओहदेदार ने ख़ुद देखना है कि जमाअत का फायदा मुक़द्दम है या ज़ाती रिश्तेदारी।

नैशनल मज्लिस आमला लज्ना इमाउल्लाह हॉलैंड की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग और हुज़ूर अनवर की सुनहरी हिदायतें

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

नौ मुबाईन के ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं

जलसा सालाना हॉलैंड में विभिन्न देशों से जमाअत के लोग शामिल हुए। उनमें एक संख्या नौ मुबाईन की भी थी। इन नौ मुबाईन ने भी जलसा के माहौल और प्रोग्रामों से भरपूर लाभ उठाया

मराक़श से सम्बन्ध रखने वाली औरत आमना साहिबा बेल्जियम से जलसा में शामिल होने के लिए आई थीं। वर्णन करती हैं कि जलसा सालाना हॉलैंड में मुझे पहली बार हुज़ूर अनवर के पीछे नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ मिली है। और मुझे दुआएं करने का अवसर मिला है। और मेरे दिल को बहुत सुकून मिला है।

मिसिज़ आईशा काबंदा देश Congo से सम्बन्ध रखती हैं और बेल्जियम में निवासी हैं। कहती हैं कि हुज़ूर अनवर ने लज्ना में जो ख़िताब फ़रमाया है इस से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है। मुझे हुज़ूर अनवर की अनुकरण में नमाज़ें पढ़ने का सौभाग्य भी मिला। हुज़ूर अनवर ने अपने ख़िताब में जो नसीहतें फ़रमाई हैं हमारे लिए ज़रूरी है कि हम उन पर अनुकरण करें

तौफ़ीक़ जामावी साहिब जिनका सम्बन्ध मराक़श से है, अपनी फ़ैमिली के साथ जलसा में शामिल होने के लिए आए थे। कहते हैं हम इसलिए जलसा में शामिल हुए कि हुज़ूर अनवर का दर्शन कर सकें और हुज़ूर अनवर की अनुकरण में नमाज़ें पढ़ सकें। जलसा का एक रुहानी माहौल होता है और हमें इस से बहुत लाभ मिलता है। हुज़ूर अनवर के ख़त्बों को का एक एक शब्द हमारे दिल तक पहुंचा है। हुज़ूर अनवर के ख़त्बों को ने हमें दोबारा चार्ज कर दिया है

एक घाना के दोस्त अब्दुस्समद साहिब जो बेल्जियम में निवासी हैं, जलसा में शामिल हुए, कहते हैं कि मैंने हुज़ूर अनवर के समस्त ख़त्बे सुने हैं। हुज़ूर अनवर ने हमें हमारी रुहानी दृष्टि से भी ज़िम्मेदारियों की तरफ़ ध्यान दिलाया है। यह कि हमारी बैरूनी लिबास की ख़ूबसूरती से अधिक हमारी अंदरूनी और रुहानी ख़ूबसूरती होनी चाहिए जो कि नमाज़ के द्वारा पैदा हो सकता है। हुज़ूर अनवर के ख़त्बों को के एक एक शब्द ने मेरे दिल पर बहुत प्रभाव किया है। हुज़ूर अनवर ने हमें हमारी कमजोरियों की तरफ़ भी ध्यान दिलाया है। मैं अपने आपको बड़ा ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ कि यहां आकर हुज़ूर अनवर की अनुकरण में नमाज़ें अदा कीं और इस रुहानी माहौल से उठाया।

एक मुबाइयात दोस्त करबूज़ इदरीस साहिब जोकि मराक़श से हैं और बेल्जियम में निवासी हैं। जलसा में शामिल होने के लिए आए थे। कहते हैं कि पहले मुझे जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने का अवसर मिला था और अब हॉलैंड के जलसा में शामिल हुआ हूँ। इन जलसों में वही उख़ुवत और भाईचारा की शिक्षा मिलती है जो इस्लाम पेश करता है। लोग बड़ी ख़ुशी और मुहब्बत के साथ एक दूसरे को मिलते हैं। जलसों में शामिल हो कर ईमान को बड़ी मज़बूती मिलती है। जब भी समय के ख़लीफ़ा का दर्शन होता है तो दिल को एक सुकून और इतमीनान प्राप्त होता है। यहां मैंने बार-बार हुज़ूर अनवर का दर्शन किया और दिली सुकून पाया। मैं ख़ुदा का शुक्र अदा करता हूँ।

रवांडा देश से सम्बन्ध रखने वाले एक नौजवान वज़ीली सद्दाम साहिब बेल्जियम से आए थे। महोदय ने बताया कि इस जलसा में शामिल हो कर मैंने ख़िलाफ़त की बरकतों को समेटा है। मुझे हुज़ूर अनवर के ख़त्बों को सुनने का अवसर मिला। हुज़ूर अनवर की नसीहतें सुनें। इस दृष्टि से मैं अपने आपको बड़ा ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ। हुज़ूर अनवर के बरकतों वाले वजूद से बरकत लेने की हर एक की इच्छा होती है। मैंने भी जलसा में शामिल हो कर इस बरकत से हिस्सा लिया है।

देश यमन से सम्बन्ध रखने वाले एक दोस्त अब्दुल्लाह अलहमरी साहिब बेल्जियम से आए थे। कहने लगे सबसे पहले मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

आजकल दुआओं, दुआओं और दुआओं पर बहुत ज़ोर दें। अल्लाह तआला जमाअत के हर फ़र्द को और सामूहिक रूप से जमाअत को भी हर दृष्टि से अपनी हिफ़ाज़त में रखे

महामारी के दिनों में दुआओं के साथ सुरक्षा नियमों को धारण करने की नसीहत

कारोबारी लोगों को इन्सानियत की सेवा और हमदर्दी की भावना के अधीन बन्दों के हुक़ूक़ अदा करते हुए खाने पीने की चीज़ों और ज़रूरी अनिवार्य वस्तुओं को कम से कम लाभ पर बेचने की नसीहत

ख़िलाफ़त से सच्चा प्यार का सम्बन्ध रखने वाले,कामिल इताअत करने वाले, अल्लाह तआला से किए गए हर अह्द को पूरा करने वाले, अमला हिफ़ाज़त ख़ास के कारकुन, इंतिहाई मुख़लिस और नि:स्वार्थ सिलसिला के ख़ादिम

आदरणीय नासिर अहमद सईद साहिब की वफ़ात पर उनका ज़िक्रे ख़ैर

"ये उन लोगों में शामिल होते हैं जिनके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ये शहीद हैं"

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 अप्रैल 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّينِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ۔ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

आजकल करोना की महामारी की वजह से जो दुनिया के हालात हैं उसने अपनों को भी, ग़ैरों को भी सबको परेशान किया हुआ है। लोग ख़त लिखते हैं, अपनी परेशानियों का वर्णन करते हैं। अपने प्यारों, क़रीबियों, रिश्तेदारों की बीमारियों के कारण से परेशान हैं चाहे वह कोई भी बीमारी हो। इन हालात में बहुत अधिक परेशानी का इज़हार होता है कि अगर कोई और बीमारी भी है तो कमज़ोर जिस्म इस महामारी की बीमारी को ले ही न ले। अहमदियों में से कुछ को इस बीमारी का हमला भी हुआ है। बहरहाल एक परेशानी ने दुनिया को घेरा हुआ है। एक मुरब्बी साहिब ने मुझे लिखा कि समझ नहीं आ रही कि यह क्या हो गया है और क्या हो रहा है। बात उनकी ठीक है। हक़ीक़त यही है कि कुछ पता नहीं लग रहा कि दुनिया को क्या हो रहा है लेकिन अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में भी इन्ही हालात के बारे में, आजकल के ज़माना के हालात के अनुसार है कि

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا (अज़्ज़िलज़ाल 4)

और इन्सान कह उठेगा कि उसे हो क्या गया है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने फरवरी 1920 ई में आज से तक़रीबन सौ साल पहले महामारियों, आकाल, परीक्षा और तूफ़ानों का वर्णन करते हुए इस आयत की संक्षिप्त व्याख्या फ़रमाई थी कि पहले एक दो ही महामारी या इबतिला आते थे लेकिन अब यह ज़माना ऐसा है कि इस में परीक्षाओं के दरवाज़े खुल गए हैं।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 6 पृष्ठ 387 ख़ुत्बा जुमअ: 6 फरवरी1920 ई)

मैं भी पिछले कई सालों से यह कह रहा हूँ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के प्रादुर्भव के बाद और जब से कि आप ने दुनिया को खासतौर पर आफ़तों और आसमानी बलाओं से सचेत किया है, होशियार किया है दुनिया में तूफ़ानों , भुकम्पों , महामारिओं की संख्या बहुत बढ़ गई है और प्राय तौर पर यह महामारिया और बलाएं इन्सान को होशियार करने के लिए आ रही हैं कि तुम अपने पैदा करने वाले के भी हक़ अदा करो और अल्लाह तआला की मख़लूक़ के भी हक़ अदा करो, उस के बंदों के भी हक़ अदा करो। अत: इन हालात में हम ने ख़ुद भी अल्लाह तआला की तरफ़ पहले से अधिक झुकना है और दुनिया को भी होशियार करना है। कुछ बीमारियां या तूफ़ान और महामारियां ऐसी हैं कि जब दुनिया में आएं तो क़ुदरती तौर पर इस का प्रभाव प्रत्येक पर पड़ता है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो भी यह फ़रमाते हैं कि ठीक है कुछ परीक्षाओं का हम से सम्बन्ध नहीं है लेकिन इस दुनिया में जब हम रहते हैं तो कई बातों में जैसे महामारीयां हैं, अकाल हैं उनमें हमें भी एक हद तक हिस्सा लेना पड़ता है अर्थात हम भी इस में शामिल होते हैं। हम पर भी वे प्रभाव डालती हैं। यह नहीं होता कि इलाही जमाअतों को उनसे बिलकुल सुरक्षित रखा जाए। आप ने फ़रमाया कि क्योंकि यह ख़ुदा की मस्लहतों के विरुद्ध है।

(उद्धरित ख़ुत्बात महमूद भाग 6 पृष्ठ 387-388 ख़ुत्बा जुम्अ: 6 फरवरी1920 ई)

लेकिन मोमिन इन मुश्किलों से अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकते हुए, उस का शुक्रगुज़ार बंदा बनते हुए गुज़र जाता है। अत: जैसा कि मैं ने कहा कि हमें इन दिनों में विशेष रूप से अल्लाह तआला के हुज़ूर बहुत झुकना चाहिए और इस का रहम और फ़ज़्ल माँगना चाहिए। इसलिए पहले से बढ़कर हर अहमदी को अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकने की कोशिश करनी चाहिए। कुछ लोग कुछ प्रतिक्रिया कर देते हैं कि यह महामारी निशान के तौर पर है और सावधानियों की या कुछ ईलाज की कोई ज़रूरत नहीं या उस किस्म के और ऐसे प्रतिक्रिया जो दूसरों की भावनाओं को तकलीफ़ पहुंचाते हैं। हमें नहीं पता कि यह निशान है, खासतौर पर कोई निशान है या नहीं लेकिन प्राय रूप से बहरहाल हम कहते हैं जैसा कि मैं ने अभी भी कहा और कुछ ख़ुत्बे पहले भी मैंने इस बीमारी के वर्णन में शुरू में ही कहा था कि धरती और आकाश की बलाएं और आफ़तें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बिअसत के बाद बहुत बढ़ गई हैं। अत: प्राय रूप से तो बेशक कहा जा सकता है लेकिन इस को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ज़माना के प्लेग के साथ मिलाना और फिर इस किस्म की बातें करना कि नऊज़ बिल्लाह जो अहमदी इस बीमारी में पीड़ित हैं या इस से वफ़ात पा गए हैं उनका ईमान कमज़ोर है या था। यह कहने का किसी को हक़ नहीं है।

प्लेग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के लिए एक निशान के तौर पर ज़ाहिर हुआ यद्यपि कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बीमारी से फ़ौत होने वाले को शहीद क़रार दिया है।(सही अल-बुख़ारी किताबुत्तिब बाब मा यज़कर फित्ताऊन हदीस 5733) लेकिन बहरहाल यह क्योंकि एक प्लेग की बीमारी के निशान के तौर पर ज़ाहिर हुआ था और इस के बारे में अल्लाह तआला ने आप को खासतौर पर फ़रमाया था, इस बारे में आप ने ऐलान भी फ़रमाया था कि यह निशान है और इस बारे में जमाअत को हिदायतें भी फ़रमाई थीं इसलिए इस प्लेग की जो आप के ज़माना में आया एक अलग हैसियत थी लेकिन साथ ही उस वक़्त भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने एक अवसर पर जमाअत को यह फ़रमाया बल्कि मुफ़्ती साहिब रज़ि को कहा कि अख़बार में इस का ऐलान कर दें कि मैं अपनी जमाअत के लिए बहुत दुआ करता हूँ कि वह इस को बचाए रखे । मगर आप फ़रमाते हैं कि क़ुरआन करीम से यह प्रमाणित है कि जब अल्लाह तआला का क़हर नाज़िल होता है तो फिर बुरों के साथ नेक भी लपेटे जाते हैं और फिर उनका हश्र अपने अपने कर्मों के अनुसार होगा। फिर केवल यह नहीं कि उनको, नेकों को कोई असर न होगा हाँ नेकों पर भी प्रभाव हो जैसा कि पहले भी ज़िक्र हो चुका। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने फ़रमाया कि यह क़ुदरत का कानून है। प्रभाव तो होता है।

फिर आप फ़रमाते हैं देखो हज़रत नूह का तूफ़ान सब पर पड़ा और स्पष्ट है कि प्रत्येक मर्द औरत और बच्चे को इस से पूरे तौर पर ख़बर न थी कि नूह का दावा और इस के तर्क क्या हैं। जिहाद में जो विजय हुईं वे सब इस्लाम की सच्चाई के लिए निशान थीं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सहाबा जिहाद में शामिल हुए। जिहाद में विजय हुई। इस के बाद ख़ुलफ़ाए राशिदीन के ज़माने में भी जिहाद हुए। उनमें कुछ जगह शिकस्तें भी हुईं लेकिन प्राय रूप से विजय हुईं। आप

फ़रमाते हैं ये सब इस्लाम की सच्चाई के लिए एक निशान थीं। आप फ़रमाते हैं कि लेकिन हर एक में कुफ़्फ़ार के साथ मुस्लमान भी मारे गए। यह नहीं हुआ कि केवल काफ़िर मारे गए। यद्यपि जिहाद निशान के तौर पर था लेकिन इस में मुस्लमान भी मारे गए और फ़रमाया कि मुस्लमान जो मारा गया वह मुस्लमान शहीद कहलाया। ऐसा ही ताऊन हमारी सच्चाई के लिए एक निशान है और संभव है कि इस में हमारी जमाअत के कुछ आदमी भी शहीद हों। फिर आप फरमाते हैं सबसे प्रथम अल्लाह के अधिकारों को अदा करो। अपने नफ़्स को भावनाओं से पवित्र रखो। इस के बाद बन्दों के अधिकारों को अदा करो और नेक कर्म को पूरा करो। ख़ुदा तआला पर सच्चा ईमान लाओ और विनय के साथ ख़ुदा तआला के समक्ष दुआ करते रहो और कोई दिन ऐसा न हो जिस दिन तुम ने ख़ुदा तआला के हुज़ूर रो कर दुआ न की हो। इस के बाद ज़ाहरी माध्यमों का ध्यान रखो। फिर फरमाया जो तुम में से इलाही तक़दीर के अनुसार ताऊन में पीड़ित हो जाए उस के साथ और इस के परिजनों के साथ पूरी हमदर्दी करो और हर तरह से इस की मदद करो और इस के ईलाज तथा चिकित्सा में कोई तरीक़ा बाकी न रखो लेकिन याद रहे कि हमदर्दी के यह अर्थ नहीं कि इस के ज़हरीले सांस या कपड़ों से प्रभावित हो जाओ।

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 251-253)

हमदर्दी बेशक करो लेकिन सावधानी के नियमों का पालन भी ज़रूरी हैं। उनसे बचना भी ज़रूरी है। बल्कि इस असर से बचोगे। अत: इस बात से हमें यह शिक्षा लेनी चाहिए कि जो भी मदद करने वाले हैं उनको जो ये ज़रूरी सावधानियां हैं जैसे आजकल यह कहा जाता है मास्क पहनो और दूसरी सावधानियों हैं उनको सामने रखना चाहिए। इसी तरह से बिना कारण लोगों के घरों में आने जाने से भी बचना चाहिए। हुकूमत ने भी मना किया है। इस से परहेज़ चाहिए।

आजकल यहां यूके में बावजूद हुकूमत के कहने के और मना करने के लोग पार्कों में जा कर इकट्ठे मिलना-जुलना रखते हैं। आज्ञा तो सिर्फ इस सीमा तक है कि तुम वाक (walk)कर सकते हो। थोड़ी सी खुली हवा में जा सकते हो। यह नहीं है कि पार्कों में बैठ कर पिक्निकें मनानी शुरू कर दो और कई लोग इकट्ठे हो जाएं। यह ग़लत तरीक़ा है और हुकूमत बार-बार इस तरफ़ ध्यान दिला रही है। कारों में बैठ कर चले जाते हैं। हुकूमत ने कहा है कि अगर तुम यह कहते हो कि हम हवा के लिए जाते हैं। exercise के लिए पार्क में जाते हैं तो फिर घरों से पैदल जाओ या साईकलों पर जाओ। यह कारों में इकट्ठे बैठ कर जो जाते हो यह भी ग़लत तरीक़ा है। अब कुछ जगह कौंसिलों ने पार्किंग की जगहें बंद करने का ऐलान किया है कि कारों के आने की इजाज़त ही नहीं। पार्किंग की इजाज़त ही नहीं है। बहरहाल अहमदियों को इस किस्म की हरकतों से बचना चाहिए। जिनके सपुर्द मदद के काम हैं, ख़ुद्दामुल अहमदिया ने भी बहुत सारे वालंटेयर पेश किए हैं और भी मदद कर रहे हैं वे सारी सावधानियों और दुआओं के साथ इस मदद के कर्तव्य को सरअंजाम दें और असावधानियों से बचें। बिना किसी कारण अपने आपको हलाकत में न डालें। यह अज्ञानता है। यह कोई बहादुरी नहीं है, यह आज्ञानता कहलाती है। अत: बहुत सावधानी करें।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि ख़ुदा न चाहे जो इस बीमारी से मर जाए वह शहीद है। उस समय जो प्लेग थी इस के लिए नहलाने की ज़रूरत नहीं और न नया कफ़न पहनाने की ज़रूरत है। इस से फिर शहीद वाला व्यवहार किया जाता है? यहां तो हुकूमत ने कुछ सीमा तक आज्ञा दी हुई है नहला भी सकते हैं और कफन भी दे पहना सकते हैं। उस ज़माना में जो कठिन हालात थे उस समय आप ने फरमाया था कि आवश्यकता नहीं। फिर बार बार आप ने फरमाया कि घरों की सफाई बहुत अधिक किया करो इस के बारे में विशेष रूप से हिदायत फरमाई और घरों की सफ़ाई के साथ ही यह भी फ़रमाया कि अपने कपड़ों की सफ़ाई रखो। अपने कपड़े भी साफ़ रखो और नालियां भी साफ़ कराते रहो। यहां तो सारा सीवरेज सिस्टम (sewerage system) अंडरग्राऊंड (underground)होता है। ग़ैर तरक़्क़ी वाले देशों में जहां नालियां खुली होती हैं यह खासतौर पर बहुत ज़रूरी चीज़ है कि नालियां साफ़ रखी जाएं। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात को खासतौर पर फ़रमाया कि सबसे पहले यह है कि अपने दिलों को भी साफ़ करो और ख़ुदा तआला के साथ पूरी सुलह कर लो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 253)

अत: हमें इन हालात में भी जो आजकल इस महामारी की वजह से हैं और हर एक इस से प्रभावित है जैसा कि मैंने कहा लिखने वाले लिखते भी हैं इन बातों की तरफ़ विशेष ध्यान रखना चाहिए। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारे लिए दुआओं का रास्ता खुला है। हमें इस यक़ीन के साथ अल्लाह तआला के आगे झुकना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हमारे लिए दुआओं का रास्ता खोला है और ख़ुदा तआला दुआएं सुनता है। अगर ख़ालिस हो कर उस के आगे झुका जाए तो वह क़बूल करता है, किस रंग में क़बूल करता है यह वह बेहतर जानता है। उमूमी तौर पर अपने लिए, अपने प्यारों के लिए, अपने अज़ीज़ों के लिए, जमाअत के लिए और उमूमी तौर पर इन्सानियत के लिए दुआएं करनी चाहिऐं। दुनिया में बहुत से ऐसे लोग हैं और उनमें अहमदी भी होंगे जिनके पास सावधानियों के सामान उपलब्ध नहीं, जिन को ईलाज की सुविधाएं नहीं हैं, खाने पीने की सुविधाएं नहीं हैं अल्लाह तआला उन पर भी और हम सब पर भी रहम फ़रमाए। हम जमाअत के तौर पर कोशिश करते हैं कि इन हालात में ख़ुराक इत्यादि हर अहमदी तक पहुंचाएं लेकिन फिर भी हो सकता है , कमी रह जाती है बल्कि यह कोशिश होती है कि ख़ुराक या ईलाज की सुविधाएं पहुंचाएं। अहमदियों के घर पहुंचाने की इस कोशिश के बावजूद कमी रह जाती है बल्कि हम तो यहां तक कोशिश करते हैं कि ग़ैरों तक भी यह सब सुविधाएं ईलाज की सुविधा या ख़ुराक इत्यादि की सुविधा जहां ज़रूरत है पहुंचे और बेग़र्ज़ हो कर यह सेवा विशेष रूप से हमदर्दी के भावना से हम करते हैं लेकिन फिर भी कुछ द्वेष वाले मीडिया के द्वारा या तथाकथित उल्मा ये इल्ज़ाम लगा देते हैं कि अहमदी जो ये सेवा कर रहे हैं या ख़ुराक पहुंचा रहे हैं या मैडीकल ऐड दे रहे हैं ये अपनी तब्लीग़ के लिए मदद करते हैं ताकि उनकी तब्लीग़ के रस्ते खुलें। बहरहाल हमें इन इल्ज़ामों से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। अल्लाह तआला हमारी नीयतों और हमारी भावना को जानता है। फिर मैं कहूँगा कि आजकल दुआओं, दुआओं और दुआओं पर बहुत ज़ोर दें। अल्लाह तआला जमाअत को हर लिहाज़ से जमाअत के हर फ़र्द को हर लिहाज़ से और सामूहिक पर जमाअत को भी हर लिहाज़ से अपनी हिफ़्ज़ तथा अमान में रखे। अल्लाह तआला मुझे भी और आपको भी दुआएं करने और दुआओं की क़बूलीयत से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

यह बात भी मैं कुछ अहमदी कारोबारी लोगों के लिए कहना चाहता हूँ कि जो अहमदी किसी कारोबार में हैं वे इन दिनों में अपनी चीज़ों पर ग़ैर ज़रूरी मुनाफ़ा बनाने की कोशिश न करें और ग़ैर ज़रूरी मुनाफ़ा बनाने की बजाय और खासतौर पर खाने पीने की चीज़ों में और ज़रूरी अनिवार्य चीज़ों में ग़ैर ज़रूरी मुनाफ़ा बनाने की बजाय यह उन चीज़ों को कम से कम लाभ पर बेचें और यही इन्सानियत की सेवा के दिन हैं जिसकी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी नसीहत फ़रमाई है कि हमदर्दी की भावना पैदा करो। हुक़ूक़ुल ईबाद की अदायगी के यही दिन हैं और इस माध्यम से यह ख़ुदा तआला का क़ुर्ब पाने के भी दिन हैं। अल्लाह तआला हर एक को जो भी कारोबारी लोग हैं इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए कि वह इन हालात में बजाय ग़ैर ज़रूरी लाभों के एक हमदर्दी के भावना के अधीन अपने कारोबारों को भी चिलाऐं।

अब मैं पिछले दिनों फ़ौत होने वाले हमारे एक बहुत मुख़लिस कारकुन और सिलसिला के ख़ादिम आदरणीय नासिर अहमद सईद साहिब का ज़िक्र करूँगा जो

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

5 अप्रैल को वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन

नासिर अहमद सईद साहिब 1951 ई में डिस्का ज़िला स्यालकोट के एक गांव में ताज दीन साहिब के घर में पैदा हुए थे। उनकी पिता का नाम ताज दीन था। आप पैदाइशी अहमदी थे। शिक्षा अधिक हासिल नहीं की। उन्होंने मिडल तक, आठवीं क्लास तक शिक्षा हासिल की। फिर 1973 ई में नज़ारत उमूर आमा के अधीन बतौर कारकुन हिफ़ाज़त ख़ास उनका तक़र्रुर हुआ। (हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे रहमहुल्लहा की अप्रैल 1984 ई में मेरा ख़्याल है रब्वह से हिज्रत हुई थी। इस के बाद बहरहाल फिर 1985 ई में उनका रबोह से लंदन तबादला हो गया। और सेवा सरअंजाम देते रहे। उम्र के लिहाज़ से जो क़वाइद की दफ़्तरी कार्रवाई होती है इस के अनुसार उनको अक्तूबर 2010 ई में रिटायर कर दिया गया था लेकिन उन्होंने रिटायरमैंट के बाद भी अपना काम जारी रखा, डयूटी के फ़राइज़ सरअंजाम देते रहे और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ख़िलाफ़त साल्सा से ले के अब तक, मेरे वक़्त तक उनको डयूटी की सआदत मिली।

नासिर सईद साहिब बहुत से गुणों के मालिक थे। बड़ी ईमानदारी और चुस्ती के साथ अपनी डयूटी देते थे। ख़िलाफ़त अहमदिया के साथ उनको बड़ा सच्चा प्यार का सम्बन्ध था। उनके पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी कुलसूम बेगम साहिबा हैं। एक बेटा है ख़ालिद अहमद सईद और आगे उनके ख़ालिद सईद साहिब के बच्चे हैं। ख़ालिद सईद साहिब भी रज़ाकार के तौर पर हिफ़ाज़त ख़ास में डयूटी देते रहते हैं। अल्लाह तआला उनको नासिर सईद साहिब की तरह वफ़ादार बनाए और उनके नक़्श क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और नासिर सईद साहिब की पत्नी को सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए

नासिर सईद साहिब के एक रिश्तेदार हैं। उनके मामू के बाटे महमूद साहिब रब्वह में हैं। महमूद साहिब पहले फ़ौज में थे और उनके हमउमर ही थे। कहते हैं कि नासिर सईद साहिब के माता पिता ने भी उनको कहा कि फ़ौज में भर्ती हो जाओ या कोई और नौकरी कर लो तो उन्होंने उन्हें जवाब दिया कि अगर कोई नौकरी करनी हुई तो जमाअत की नौकरी करूँगा वर्ना यह छोटा सी खेती है यही अपना खेती का काम करता रहूँगा और इस के बाद फिर जैसा कि मैंने कहा यह जमाअत में आए और भर्ती हो गए। अपने उनके रिश्तेदार ही लिखते हैं कि अपने सब रिश्तेदारों से बहुत दिल से मुहब्बत का सुलूक रखते थे और बहुत से ज़रूरतमंद रिश्तेदारों की ख़ामोशी से मदद भी करते थे।

रब्वह में हिफ़ाज़त ख़ास के अमले के कारकुन शकूर साहिब हैं वह कहते हैं कि मुझे 1990 ई से 1998 ई तक लंदन में नासिर सईद साहिब के साथ डयूटी का मौक़ा मिला और हमेशा उन्हें ख़िलाफ़त का वफ़ादार और इताअत करने वाला पाया और डयूटी के मामला में हमेशा बड़े ईमानदार थे। हमेशा अपनी डयूटी के लिए वक़्त से पहले आ जाया करते थे और राज़ वाला कोई पैग़ाम होता था तो हमेशा उस को राज़ रखते और अपने साथियों को भी यह नसीहत करते कि राज़ में रखना चाहिए और अपने किसी साथी से भी कभी उस का ज़िक्र नहीं करते थे

मेजर महमूद साहिब अफ़्सर हिफ़ाज़त ख़ास हैं उन्होंने जो लिखा है कहते हैं कि नासिर सईद साहिब बहुत अधिक वफादार कारकुन थे। उनकी रूह का केन्द्र सिर्फ और सिर्फ ख़िलाफ़त अहमदिया थी। दुनियावी सुख सुविधाओं से दूर थे। धर्म की सेवा ही उनका लक्ष्य था। सेवा करने के इलावा उनकी और कोई सोच नहीं थी। हार्दिक इच्छा रखते थे कि ख़िलाफ़त के दर पर जान निकले और इसी को उन्होंने सच कर दिखाया। मेहमान नवाज़ी में भी बड़े आगे बढ़े हुए थे। अपनी मिसाल आप थे। हर बड़े छोटे की इज़्ज़त का ख़्याल रखते थे। अपने से सीनीयर की बेहद इज़्ज़त करते थे। कभी होंटों पर कभी ज़बान पर गिला शिकवा नहीं लाए और हमेशा हर हुक्म के अनुकरण को अपना फ़र्ज़ जाना। मेजर साहिब ने लिखा है कि वक़्फ़ ज़िन्दगी की वह एक लाजवाब मिसाल थे और हक़ीक़त भी यही है कि बेलौस हो के उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में सेवा की है।

जामिया जर्मनी के एक छात्र हारून साहिब हैं वह भी लिखते हैं कि कई बार उनको अनुभव हुआ कि अगर लोगों की, दोनों पक्षों में कोई रंजिशें हैं असहमति है तो उनमें सुलह सफ़ाई कराने में बड़ी भूमिका अदा करते थे। कहते हैं एक बार मैं ने उनसे पूछा कि आप छुट्टियों में कभी कहीं जाते हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि ख़लीफ़ वक़्त की जो सेवा है वहां हाज़िर रहना और डयूटी देना वही वाक़िफ़ ज़िन्दगी की छुट्टियां हैं और कोई और मक़सद नहीं होना चाहिए। फिर बेशुमार लोगों ने उनके आचरण , उनकी मेहमान नवाज़ी, ख़ुशमिज़ाजी और प्यार और मुहब्बत का ज़िक्र किया है। यद्यपि वह जमाअत के किसी बड़े उच्च ओहदे पर फ़ाइज़ नहीं थे लेकिन मामूली सेवा करने वाला होने के बावजूद हर दिल-अज़ीज़ थे। जिससे मिलते उस का दिल मोह लेते थे

जर्मनी के नसीर बाजवा साहिब हैं कहते हैं बड़े उत्तम आचरण और आदतों के मालिक थे। सब के लिए बेहतर सोचते थे। हरवक़त हर शख़्स की सेवा के लिए तैयार रहते थे और दूसरों की मदद कर के ख़ुश होते थे और इस में दिली सन्तोष महसूस करते थे। अमरीका के एक ख़ादिम सय्यद उवैस हैं उन्होंने भी यह लिखा कि जब भी अमरीका के दौरे पर आए बड़ी बशाशत से मिलते। कभी थकावट के निशान उनमें नहीं देखे और ख़ुद्दाम को भी बड़े प्यार से मिलते और बड़े प्यार से समझाते और उनका हौसला बढ़ाने की कोशिश करते। उनमें यह बड़ी ख़ूबी थी। हर देश के लोगों के पत्र आ रहे हैं। सारे तो यहां वर्णन भी नहीं सकते।

फ़िरोज़ आलम साहिब हैं उन्होंने भी बहुत सारी इन्हीं ख़ूबियों का ज़िक्र कर के लिखा कि विनय, विनम्रता थी। और जब वह अकेले यहां थे तो मेहमान नवाज़ी उनकी भी करते रहे। फिर इबादत का भी ज़िक्र किया कि मैंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे की बीमारी के दिनों में मस्जिद में रात को तहज्जुद के वक़्त बड़ी तड़प से उनको दुआएं करते हुए देखा।

जर्मनी के भूतपूर्व सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया हसनात साहिब हैं। वह भी वाकिफ ज़िन्दगी हैं। उन्होंने भी यही लिखा है कि उनके इख़लास, डयूटी में लगन, ख़िलाफ़त से वफ़ा को देखकर हमेशा रशक आता था। एक तरफ़ सादगी की इंतिहा थी तो दूसरी तरफ़ एक अजीब इर्फ़ान भी उनके अंदर था। फिर कहते हैं उनसे ख़ुद्दामुल अहमदिया के सदर की हैसियत से डयूटियों के हवाले से भी बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। उन्होंने कभी अपनी सेहत या उम्र अधिक होने का इज़हार नहीं किया। अपनी डयूटी में वह दूसरों की तरह जवान नज़र आते थे और हसनात साहिब ही यह लिखते हैं कि मैंने कई बार देखा कि वह इस बात को बर्दाश्त नहीं करते थे कि इन से उम्र अधिक होने की वजह से कोई मतभेद वाला सुलूक करे। ठीक है जिस तरह बाक़ी ख़ुद्दाम डयूटी दे रहे हैं, बाक़ी सैक्योरिटी डयूटी दे रहे हैं मैं भी डयूटी दूँगा। अपने छोटों से बड़ी इज़्ज़त से पेश आते। बड़े प्यार से पेश आया करते थे वह कहते हैं कि उनके सुलूक से हमें बड़ी शर्मिंदगी होती थी। हमारी डयूटी देने वाले ख़ुद्दाम की बड़ी हौसला अफ़ज़ाई करते थे। यह बड़ी अच्छी बात लिखी है। कहते हैं कि लोग बातें कर के या कैंप आयोजित कर के किसी को ट्रेनिंग देते हैं लेकिन आपकी डयूटी, आपकी जो यह ट्रेनिंग थी कि निस्वार्थ हो के अपनी डयूटी देना, हाज़िर दिमाग़ी, इख़लास और दुआओं के माध्यम से आपकी ट्रेनिंग थी और कहते हैं जब भी अवसर मिलता ,कहीं मिलते तो हमेशा यही कहा करते थे कि दुआ करो मेरा ख़ातिमा भलाई पर हो।

रशियन डैसक के ख़ालिद अहमद साहिब हैं उन्होंने और बहुत सारी बातों के साथ जो सब लिख रहे हैं यह भी लिखा कि वह हमेशा ख़ामोशी से न केवल ज़रूरतमन्दों की मदद किया करते थे बल्कि बहुत से मालदार जमाअत के लोगों को भी अपने ग़रीब और ज़रूरतमन्द भाईयों और बहनों की मदद की तरफ़ स्थायी तौर पर ध्यान दिलाते और राग़िब करते रहते थे।

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

फिर उनका एक विशेष गुण मेहमान नवाज़ी थी। खासतौर पर जलसा के दिनों में उनकी यह विशेषता अपने उरूज पर होती थी। जलसा पर आए हुए मेहमानों का दिल से सम्मान किया करते थे और बिना किसी अतिश्योक्ति के कई मेहमानों को मर्कज़ से आए हों या अन्य देशों से आए हों उनकी रोज़ाना सुबह शाम अपने घर पर बुला कर के अच्छी मज्लिस बनाते, उनको बिठाते और फिर उनको अच्छा खाना खिलाते। और फिर साथ ही हर एक मेहमान को मस्जिद में बिछाई हुई एक जाए नमाज़ का तोहफ़ा भी दे दिया करते थे।

जर्मनी के अतहर ज़ुबैर साहिब हैं उन्होंने भी यही लिखा कि ख़ुसूसीयत के साथ ख़िलाफ़त के साथ वफ़ा का सम्बन्ध था। बड़े मुख़लिस थे और गुफ़्तगु का अंदाज़ बड़ा शफ़क़त वाला और नरम था और मैंने कई बार देखा कि अगर अगली शिफ़्ट पर आने वाले किसी कारकुन को देर भी हो जाती तो शिकायत न करते थे बल्कि अल्लाह का शुक्र अदा करते थे कि ख़लीफ़ा वक़्त की डयूटी में कुछ अधिक वक़्त मुझे मिल गया और हरवक़त डयूटी के लिए कमर बांधे रहते थे। बीमार होते तब भी डयूटी से जल्द फ़ारिग़ होने की इच्छा न करते बल्कि आख़िरी बीमारी में भी मैंने सुना है कि अपने बेटे को यही कहा कि अच्छा , वक़्त क्या है? तो इस का मतलब हुआ कि आज की डयूटी तो फिर गई। आज मैं डयूटी पर जा नहीं सकूँगा। बहुत अधिक बीमारी में भी इस वक़्त डयूटी की थी।

फिर यहां एक हमज़ा रशीद साहिब हैं वह कहते हैं कि बड़े प्यार और मुहब्बत करने वाले और हौसला बढ़ाने वाले नेक बुज़ुर्ग थे। ख़ुद्दाम के लिए एक नमूना थे। बड़ी जाँ-फ़िशानी से ,मेहनत से और लगन के साथ अपनी ज़िम्मेदारी निभाते थे। ख़िलाफ़त से बहुत अधिक मुहब्बत करने वाले थे। ख़ुद्दाम को हमेशा ध्यान दिलाते कि तुम लोगों ने मुहब्बत करते हुए ख़लीफ़ा वक़्त की डयूटी सरअंजाम देनी है और इस बात को अपनी समस्त दूसरी चीज़ों पर मुक़द्दम करना है।

सय्यद ताहा नूर साहिब मुरब्बी सिलसिला इंडोनेशिया हैं। कहते हैं जब भी मुझे मिले इंडोनेशिया का ज़िक्र किया करते थे और इस ज़माना की बातों का ज़िक्र करते थे जब वह 2000 ई में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे के साथ इंडोनेशिया गए थे। कहते हैं एक बार यहां मस्जिद में आए हुए थे और वहां कपड़े धोने का इंतिज़ाम नहीं था तो हम ने उन्हें कहा कि हमें दें हम बाहर से धुलवा लें लेकिन आपने और आपके जो दूसरे साथी थे उन्होंने कहा कि हम कपड़े तो ख़ुद धोते हैं। कहने लगे कि हम तो नौकर लोग हैं हमारा यह स्थान नहीं है कि दूसरे लोग हमारे कपड़े धोएं और बड़ी कोशिश के बाद भी उन्होंने अपने कपड़े नहीं दिए। अब यह बज़ाहिर छोटी छोटी मामूली बातें हैं लेकिन एक वक़्फ़ ज़िन्दगी की उसूली रूह का इन बातों से पता चलता है कि एक वाकिफ ज़िन्दगी को किस तरह का होना चाहिए और नौजवानों को भी इस से शिक्षा मिलती है।

अदनान ज़फ़र साहिब साबिक़ मुहतमिम मुक़ामी यू के हैं। उन्होंने भी लिखा है कि डयूटी देने की तरफ़ खासतौर पर हमें ध्यान दिलाते रहते थे और बाक़ी बातें तो लिखें डयूटी के दौरान खाने पीने का ख़्याल रखने वाली बातें और चीज़ें भी लिखीं। इस के इलावा जो ख़ास चीज़ उन्होंने लिखी वह लिखते हैं कि मुझे ख़िलाफ़त के आदाब उन्होंने सिखाए। ख़िलाफ़त से मज़बूत सम्बन्ध के गुरु समझाए। इंतिहाई दूर-अँदेश शख़्सियत थी। जब भी किसी मामला में मश्वरा मांगा हमेशा फ़ायदा हुआ।

अतहर अहमद साहिब हिफ़ाज़त ख़ास के कारकुन हैं यह भी लिखते हैं कि मैं ने नौ साल डयूटी की। 2011 ई से लेकर 2020 ई तक उमूमी में था। उस की डयूटी की। फिर हिफ़ाज़त ख़ास में शामिल हुआ तो उन्होंने नासिर सईद साहिब से पूछा कि आपने 48 साल, तीन ख़िलाफ़तों के साथ डयूटी की है। मुझे कोई नसीहत करें ताकि मैं भी आपकी तरह डयूटी कर सकों तो उन्होंने कहा कि यहां अपनी आँखें और कान खुले रखना और ज़बान बंद रखना और इस के साथ दुआ करते रहना। यह नसीहत जो है इस पर अमल करना उमूमी तौर पर हर वाकिफ ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी है, बल्कि हर कारकुन और जमाअत की सेवा करने वाले के लिए ज़रूरी है, हर ओहदेदार के लिए ज़रूरी है। यह बड़े पते की बात है। फिर कहते हैं कि उनके साथ डयूटी कर के, उनको लोग लाला जी कहते थे कि लाला जी के साथ डयूटी कर के पता चला कि जब किसी अफ़्सर की तरफ़ से हुक्म आए तो जो भी हुक्म आता है इस को वैसे ही करना है। इस पर इस तरह अमल करते और करवाते थे कि वह इसी तरह करना है और इस हुक्म के अंदर से अपने मतलब नहीं निकालते थे कि ऐसे भी हो सकता है, वैसे हो सकता है। कहते हैं जितना उनको कहा जाता और जैसे कहा जाता बिलकुल वैसे करते थे और हम लोगों से भी वैसे ही करवाते थे और अगर यह कहा जाता कि अमुक शिफ़्ट इंचार्ज तो इस तरह करते हैं तो कहते मुझे नहीं पता वह क्या करते हैं। मुझे तो जैसे हुक्म मिला मैंने वैसे ही करना है और फिर यह दुआ के लिए भी खासतौर पर कहा करते थे कि जब तक हूँ अल्लाह तआला चलता फिरता रखे और जब वक़्त आए तो चलता फिरता ही ले जाए ,किसी का मुहताज न करे। अल्लाह तआला ने भी उनसे ऐसा ही सुलूक किया। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए। उनके स्तर बुलंद करे। उनकी पत्नी को भी सेहत वाली ज़िन्दगी प्रदान फ़रमाए और सब्र और हौसला भी प्रदान फ़रमाए। उनके बेटे को भी जैसा कि पहले भी मैंने कहा था बल्कि उनकी नस्ल को भी औलाद को ख़िलाफ़त और जमाअत से वफ़ा के साथ रखे।

मैं उनको उस वक़्त से जानता हूँ जब यह जमाअत की सेवा के लिए रब्वह में आए थे। यक़ीनन सब लिखने वालों ने जो भी लिखा है बड़ी हक़ीक़त है। बड़े बेलौस हो कर सेवा करने वाले थे और कामिल इताअत करने वाले थे। उनकी वफ़ात ऐसे हालात में हुई है जब जनाज़ा में अधिक लोग शामिल नहीं हो सकते। कुछ अर्से से यह दिल के मरीज़ थे। एंजियोप्लास्टी भी हुई हुई थी। कुछ दिन पहले बीमार हुए, हस्पताल भी गए। बल्कि जब हस्पताल में दाख़िल हुए हैं और हस्पताल में ही थे। डाक्टरों ने दाख़िल कर लिया और कहा कि यह बड़ा दिल का हमला हुआ है। फिर बाद मैं उन्होंने कहा कि जो वाइरस है इस का भी हमला हो गया है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि पहले किसी से लिया या हस्पताल में जो आजकल के हालात हैं वहां जा लिया लेकिन बहरहाल कुछ दिन हस्पताल में इलाज में रहे और वहीं अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हो गए। यहां जो क़ानूनी पाबंदियां हैं इस वजह से जनाज़ा भी यहां नहीं लाया जा सकता और चंद क़रीबी लोगों के इलावा जनाज़ा में जमा भी नहीं हो सकते और फिर जनाज़ा के लिए यह भी शर्त है कि उनका जो funeral home या क़ब्रिस्तान है उसी में ही जनाज़ा होगा। इसलिए आजकल जो हालात हैं इस वजह से में भी बहरहाल उनका जनाज़ा ग़ायब इंशा अल्लाह बाद में किसी वक़्त पढ़ाऊंगा।

बेशुमार लिखने वालों ने जैसा कि मैं ने कहा उनकी खूबियां लिखी हैं और जो भी लिखी हैं वास्तव में हक़ लिखा है। यही खूबियां उनमें मौजूद थीं जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ। अपनी सेवा को, अपने अह्द को वफ़ा से निभाते हुए यह इस दुनिया से विदा हुए हैं। हर अह्द जो उन्होंने अल्लाह तआला से किया उस को पूरा किया। उनकी ज़िन्दगी में हमें यही नज़र आता है। इस लिहाज़ से यह उन लोगों में शुमार होते हैं जिनके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह शहीद हैं। अल्लाह तआला उन्हें उन में शामिल फ़रमाए और वे समस्त अहमदी जिनकी इस बीमारी के कारण से वफ़ात हुई है अल्लाह तआला उनसे भी रहम और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और हर एक से, अल्लाह बेहतर जानता है कि किस के साथ क्या है हमारी तो यही दुआ है कि हर एक जो है वह अल्लाह तआला की रहमत और मग़फ़िरत हासिल करने वाला हो।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 11 मई 2020 ई पृष्ठ 5 से 8)

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

करता हूँ जिसने मुझे इस जलसा में शामिल होने का अवसर दिया। और मैं अपने आपको बड़ा ख़ुशनसीब समझता हूँ कि मुझे हुज़ूर अनवर के दर्शन की, हुज़ूर अनवर के क़ुरब का सौभाग्य नसीब हुआ। मैंने हुज़ूर के अनुकरण में नमाज़ें अदा कीं। मेरा सम्बन्ध एक अरब देश से है। मैं बहुत दुआ करता हूँ कि हुज़ूर की इच्छा के अनुसार अरब लोगों तक भी जमाअत अहमदिया का अमन वाला पैग़ाम पहुंचे और वे भी ख़िलाफ़त की नेअमत से लाभान्वित हो सकें और जो सुकून मुझे जमाअत में शामिल हो कर प्राप्त हुआ है समस्त अरब देशों के लोग भी इस सुकून को पा सकें। आमीन।

30 सितम्बर 2019 ई दिनांक सोमवार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छः बजे मस्जिद बैयतुन्नूर में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायतों से नवाज़ा और विभिन्न दफ़्तरी मामले सर अंजाम दिए

नैशनल मज्लिस आमला जमाअत हॉलैंड की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मीटिंग

प्रोग्राम के अनुसार सुबह 11 बजकर10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बैयतुन्नूर तशरीफ़ लाए और नैशनल मज्लिस आमला जमाअत हॉलैंड की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग शुरू हुई। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने जनरल सैक्रेटरी साहिब से जमाअतों और तजनीद के बारे में पूछा। जनरल सैक्रेटरी ने निवेदन किया कि जमाअतों की संख्या 17 है और रजिस्टर्ड तजनीद 1612 है। 100 के लगभग ऐसे दोस्त हैं जो अभी तसदीक़ की प्रक्रिया में हैं

हुज़ूर अनवर के पूछने पर जनरल सैक्रेटरी साहिब ने बताया कि हमारी दो तीन जमाअतें सक्रिय नहीं हैं और बाक़ी सब जमाअतें सक्रिय और active हैं और उनकी तरफ़ से नियमित रिपोर्टें प्राप्त होती हैं। ऐडीशनल जनरल सैक्रेटरी रिपोर्ट के हवाला से समस्त सदरों से सम्पर्क करते हैं और याददहानी भी करवाते हैं। हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि जिनकी रिपोर्टें नहीं आतीं उनके सदरों को ध्यान दिलाएँ

नैशनल सैक्रेटरी तब्लीग़ से हुज़ूर अनवर ने तब्लीग़ी मंसूबा बंदी और प्रोग्रामों के बारे में पूछा। इस पर सैक्रेटरी तब्लीग़ ने बताया कि हम ने नया तब्लीग़ी प्लान बनाया है। अब हुज़ूर अनवर जो हिदायतों देंगे हम वे भी इस में शामिल करेंगे। हुज़ूर अनवर के पूछने पर बैअतों की रिपोर्ट के हवाला से जनरल सैक्रेटरी साहिब ने बताया कि इस साल हमारी बैअतों की संख्या 7 थी। हम ने भूतपूर्व 100 बैअतों का टार्गेट अपने समक्ष रखा हुआ है। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या लोकल लोगों ने भी बैअत की है। इस पर निवेदन किया गया कि स्थानीय लोगों ने भी बैअत की है। दो नौजवान हैं और जलसा सालाना पर आए हुए हैं और डयूटियाँ भी दे रहे हैं

नैशनल सैक्रेटरी ज़याफ़त से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि जलसा पर मेहमानों के खाने का प्रबन्ध किस के ज़िम्मे था। इस पर सैक्रेटरी ज़याफ़त ने निवेदन किया कि उन्हीं के ज़िम्मे था। हुज़ूर अनवर ने पूछने फ़रमाया कि आप की आशा से बहुत अधिक मेहमान आए। पाँच हज़ार से अधिक मेहमान आए। क्या सब के खाने का प्रबन्ध हो गया था। इस पर सैक्रेटरी साहिब ने बताया कि हम ने तययारी की हुई थी। समस्त मेहमानों को खाना उपलब्ध किया गया। आलू गोश्त, दाल और रोटी के अतिरिक्त हमने चावल भी उपलब्ध किए थे।

नैशनल सैक्रेटरी तालीमुल कुरआन वक्फ आरज़ी ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि वक़्फ़ आरज़ी के विभाग में ख़ास काम नहीं हुआ। बहुत कमी है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पहले अपनी आमला को कहें कि वक़्फ़ आरज़ी के लिए वक़्त दें फिर ख़ुद्दाम, अन्सार और लज्ना की मज्लिसे आमला हैं उनको कहें कि उनकी आमला के मेम्बरों वक़्फ़ आरज़ी करें फिर आपकी स्थानीय जमाअतें हैं उनकी मज्लिसें आमला हैं। फिर ज़ेली तन्ज़ीमों की मज्लिसों की आमला हैं। विभिन्न स्तर पर सब मज्लिसे आमला मेम्बरोंो active हो जाएं तो सब ठीक हो जाएगा। वक़्फ़ आरज़ी के लिए ज़रूरी नहीं कि स्पेन भिजवाना है बल्कि हॉलैंड में भी वक़्फ़ आरज़ी कर सकते हैं। बच्चों को क़ुरआन करीम पढ़ाने, धार्मिक इल्म पढ़ाने की कक्षाएं लें। अपनी आमला से रिपोर्ट लें और फिर मुझे रिपोर्ट भिजवाएं कि आमला में से कितने मेम्बरों ने अपने आपको पंद्रह दिन के लिए वक़्फ़ आरज़ी के लिए पेश किया है। अगर आप समस्त मज्लिसों से 75 प्रतिशत टार्गेट ले लें। वक़्फ़ आरज़ी के लिए तो इस का अर्थ है कि आपने 75 प्रतिशत को involve कर लिया तो इस तरह काम शुरू करें।

नैशनल सैक्रेटरी तहरीक जदीद ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि हमारे कुछों में बेहतरी आ रही है। हम उस के लिए जमाअतों के दौरे भी करते हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि सैक्रेटरी साहिब माल के साथ बैठ कर कुछों के स्तर और कुछा देने वालों की हैसियत का जायज़ा लिया जा सकता है और फिर टार्गेट दिया जा सकता है। अधिक प्रैशर ना डालें और यह भी न हो कि बिलकुल ढीले हो जाएं।

नैशनल सैक्रेटरी वक़्फ़ जदीद को इत्फ़ाल के कुछा के हवाला से हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि इत्फ़ाल का कुछा इत्फ़ाल के ज़िम्मा लगाऐं। एक कुछा तो उनके ज़िम्मे करें। ख़ुद्दाम को टार्गेट दें कि इत्फ़ाल की तजनीद इतनी है इसलिए इतना टार्गेट है। एक बर्गर कितने का आता है। कम से कम इतना टार्गेट तो हो।

हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया गया कि यहां यह समझा जाता है कि सात से बारे साल तक के तिफ़्ल से कुछा वक़्फ़ जदीद लेना है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह दरुस्त नहीं है। सात से पंद्रह साल दफ़्तर इत्फ़ाल है। बारह साल तक नहीं बल्कि पंद्रह साल तक है। इत्फ़ाल की उम्र पंद्रह साल तक है

नैशनल सैक्रेटरी तर्बीयत से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि अब तो आपके पास चार मस्जिदें हैं। फ़ज्र और मग़रिब तथा इशा पर कितने लोग आते हैं। सैक्रेटरी तर्बीयत ने निवेदन किया कि इन मस्जिदें के अतिरिक्त हमारे पास विभिन्न जमाअतों में तीस नमाज़ सैंटर्ज़ हैं। जो हम ने घरों में बनाए हुए हैं। सत्तर प्रतिशत लोग पाँच वक़्त नमाज़ अदा करते हैं। उन में से 66 प्रतिशत बाजमाअत अदा करते हैं। पचास प्रतिशत लोग सैंटर्ज़ में जा कर नमाज़ पढ़ते हैं।

हुज़ूर अनवर ने पाकिस्तान से आने वाले मुरब्बी सिलसिला अदील बासिम साहिब के बारे में पूछा कि वह कहाँ रहते हैं। इस पर निवेदन किया गया है कि वह Arnhem मैं हैं और वहां जमाअत ने दो सैंटर बनाए हुए हैं और यह बारी बारी दोनों सैंटर्ज़ में जाते हैं और नमाज़ें भी पढ़ाते हैं।

स्थानीय तौर पर ख़ुत्बा जुम्अः के हवाला से हुज़ूर अनवर ने मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिब से पूछा कि कब शुरू करते हैं और कब ख़त्म करते हैं। इस पर मुबल्लिग़ इंचार्ज ने निवेदन किया कि जमाअतों में ख़ुत्बा जुम्अः लगभग डेढ़ बजे के लगभग शुरू करते हैं। दस पंद्रह मिनट का ख़ुत्बा होता है 2 बजे से पहले नमाज़ जुम्अः इत्यादि से फ़ारिग़ हो जाते हैं। इसके बाद फिर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का ख़ुत्बा Live सुना जाता है

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप जहां अपने ख़ुत्बों में पिछले ख़ुत्बा का ख़ुलासा वर्णन करते हैं, वहां ज़रूरत के अनुसार यहां के स्थानीय समस्याएं भी वर्णन कर दिया करें। विशेषतः नमाज़ों की तरफ़ ध्यान दिलाया करें

हुज़ूर अनवर ने इस्लाही कमेटी के क़ियाम के हवाला से पूछा कि आपको पता है उसका अर्थ किया है? क्या यह स्थानीय जमाअतों में भी स्थापित की गई है। जहां नहीं है वहां भी बनाएँ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इस का अर्थ यह है कि समस्याएं खड़ी होने से पहले नज़र रखें। इस्लाही कमेटी का काम है कि पहले इस के कि मसला खड़ा हो और मामला अधिक बढ़ जाए। इस से पहले ही नज़र रखें और आरम्भ में ही इस्लाही काम करें।

नैशनल सैक्रेटरी तर्बीयत चेयरमैन इस्लाही कमेटी ने निवेदन किया नैशनल कमेटी के अतिरिक्त कुछ बड़ी जमाअतों में यह कमेटियां बनाई गई हैं। कुछ मामले इस्लाही कमेटी के पास आते हैं। कुछ मामले ऐसे होते हैं जो बढ़ जाते हैं और क़ज़ा के पास चले जाते हैं। इस अवसर पर सैक्रेटरी उमूरे आम्मा ने बताया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का जलसा जर्मनी के अवसर पर ख़िताब सुनकर एक जोड़े ने वापसी का फ़ैसला कर लिया। यह दोनों बिलकुल अलग होने के निकट थे। वहां से उनकी वापसी हुई और उन्होंने आपस में सुलह कर ली और अपने समस्त मांगें ख़त्म कर दीं।

नैशनल सैक्रेटरी ऊमूरे ख़ारिजा से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि Almere मैं मस्जिद के आरम्भ के हवाला से जो आयोजन है इस में कितने मेहमान आ रहे हैं। इस पर सैक्रेटरी साहिब ने बताया कि पार्लीमैंट का सैशन इन दिनों जारी है। हुकूमत के विभिन्न संस्थाओं और विभागों से मेहमान आएँगे। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ऐसे प्रोग्रामों के लिए जो भी तारीख़ रखनी हो जायज़ा लेने के बाद करनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपके कुछ इसाईलम केस लटके हुए हैं। यह जल्द करवाएं। इस पर सैक्रेटरी साहिब ने निवेदन किया कि हुकूमत ने अपने कुछ विभागों

में स्टाफ़ कम किया था जिसकी वजह से देरी हुई है। इंशा अल्लाह इस साल जल्द यह केस हो जाएंगे

नैशनल सैक्रेटरी सनअत तिजारत को हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि यहां असाईलम के लिए लोग आए हुए हैं। कुछ इमीग्रेशन हो कर भी आए हैं। उनसे मिलकर काम करें। एक दूसरे की मदद भी हो जाएगी।

नैशनल सैक्रेटरी वक़्फ़ नौ ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि इस वक़्त विभाग वक़्फ़ नौ के अधीन 123 लड़के और 92 लड़कियां हैं। इस वक़्त यूनीवर्सिटी में13 लड़के और लड़कियां हैं। उनमें से आठ लड़कियां और पाँच लड़के हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया लड़कियां यूनीवर्सिटी में अधिक हैं। लड़के भी अधिक आगे आएं। जो डाक्टरज़, टीचरज़, इंजीनीयर्ज़ इत्यादि नहीं बन रहे, जामिया में नहीं जा रहे, मैंने हिदायत दी थी कि पब्लिक सर्विसिज़ में भी जाएं। इस बारे मैं काम करें।

नैशनल सैक्रेटरी जायदाद से हुज़ूर अनवर ने काम के बारे में पूछा। महोदय ने बताया कि उन्होंने नन स्पैट में हनीफ़ साहिब के साथ तामीराती काम किया है। शैक्षिक दृष्टि से उन्होंने इंजीनीयरिंग में डिग्री ली हुई है।

नैशनल सैक्रेटरी रिश्ता नाता ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि बारे रिश्ते तय हुए हैं। आठ दस प्रॉसॅस में हैं। लड़के लड़कियों की सूचि लगभग बराबर है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। सूचि बराबर है तो फिर जल्दी जल्दी मैच करवाएं।

इंटरनल आडीटर (auditor) ने बताया कि उन्होंने अभी काम शुरू किया है

क्षेत्रल उमरा भी इस मीटिंग में मौजूद थे। एक क्षेत्रल अमीर बरेमन बर्ग साहिब से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या अमीर साहिब आपको स्पेशल काम देते हैं या आप उमूमी तौर पर अपने क्षेत्र की जमाअतों को देखते हैं। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि इस वक़्त एक मस्जिद बनाने का प्रोग्राम है। हम साऊथ में मस्जिद बनाना चाहते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मस्जिद बनाएँ किस ने रोका है? निवेदन किया गया कि उनके क्षेत्र में मुरब्बी नहीं है। रिहायश का भी मसला है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जमाअत ग़रीब नहीं है तो मस्जिद बनाए। घर ले। नमाज़ सैंटर बनाए। मुरब्बी को रिहायश दे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप अपने मेम्बरों को encourage करें और ध्यान दिलाएँ

नैशनल सैक्रेटरी वसाया ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि कुल 406 मूसी हैं। अधिकतर घर की औरतें या छात्र हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया असल यह है कि कमाने वाले कितने मूसी हैं। यह अधिक होने चाहिऐं

सैक्रेटरी माल ने निवेदन किया कि 167 कमाने वाले हैं। उनमें से 92 अन्सार हैं,58 ख़ुद्दाम हैं और 17 लज्ना हैं

नैशनल सैक्रेटरी वसाया ने निवेदन किया कि कमाने वालों में से 41 प्रतिशत मूसी हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया 167 कमाने वालों में से चौरासी पचासी मूसी होने चाहिऐं।

हुज़ूर अनवर ने यहां की मासिक इन्कम, प्रति घंटा जो क़ीमत मिलती है, इस हवाला से तफ़सीली जायज़ा लिया। सैक्रेटरी साहिब ने निवेदन किया कि प्रति घंटा कीमत भी उम्र के हिसाब से विभिन्न है। जो 20-19 साल के नौजवान होते हैं और काम करते हैं। कई बार छात्र रुख़स्तों में काम करते हैं। उनकी उजरत कम होती है और जो इस से अधिक उम्र के हैं। तीस साल के लगभग हैं उनकी प्रति घंटा क़ीमत अधिक होती है। इस दृष्टि से काम करने वालों की मासिक इन्कम विभिन्न होती है

हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी साहिब माल से पूछा कि किया 167 कमाने वाले सब कुछा देते हैं। जिस पर महोदय ने निवेदन किया कि सब देते हैं लेकिन उनमें से 70 प्रतिशत आय के अनुसार देते हैं। कुछा देने वालों की कुल संख्या 608 है

नैशनल सैक्रेटरी समई बसरी से हुज़ूर अनवर ने पूछने फ़रमाया कि क्या कोई प्रोग्राम बनाते हैं जिस पर महोदय ने निवेदन किया कि प्रोग्राम बनाते हैं। अमीर साहिब ने काम ज़िम्मे किया हुआ है। हम लोकल तौर पर प्रोग्राम बनाते हैं

ऐडीशनल सैक्रेटरी इशाअत ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि मैं यहां पब्लेकेशन कमेटी का मैंबर हूँ। इस वक़्त तोहफ़ा केसरिया का अनुवाद कर रहा हूँ

मुहासिब ने हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया कि समस्त खर्चों का हिसाब देखता हूँ। सैक्रेटरी माल के साथ मिलकर चैक करता हूँ। फिर हम दोनों आपस में क्रास चैक भी करते हैं। विभिन्न डिपार्टमैंटों के बजट के लिए मैंने कोशिश की है कि सब अपने अपने बजट के अंदर रहें।

हुज़ूर अनवर की सेवा में रिपोर्ट पेश की गई कि यहां लोग सोशल लेते हैं और काम नहीं करते और कुछ ऐसे हैं जो सोशल लेने के साथ साथ छुप छुप कर काम भी करते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैं अपने ख़ुत्बों में ज़िक्र कर चुका हूँ कि सोशल न लें और अपना काम करें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो कमज़ोर हैं। सैक्रेटरी तर्बीयत और मुबल्लग़ीन का काम है कि उनको समझाते रहें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कुछ ऐसे भी हैं जो सोशल लेने का हक़ रखते हैं लेकिन वे ख़ुद बंद कर रहे हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो सोशल ले रहे हैं, काम नहीं करते और टैक्स बचाते हैं उनको दो बार समझाएँ कि अपनी इस्लाह करें। अगर यह सुधार नहीं करते तो फिर क़ानून को बता दें। किसी ख़ुशामदी की ज़रूरत नहीं है। क़ानून की पाबंदी करें।

हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी साहिब उमूरे आम्मा को हिदायत फ़रमाई कि उमूरे आम्मा और विभाग सनअत तिजारत मिलकर काम करें कि नए आने वालों को किस तरह काम उपलब्ध करना है। उनकी किस तरह मदद की जा सकती है और उन को कोई काम दिलवाया जा सकता है। यह काम भी उमूरे आम्मा का है कि लोगों की काम के प्राप्त करने के लिए रहनुमाई करे ताकि उनके अपने माली हालात बेहतर हों।

बाजमाअत नमाज़ की अदायगी के हवाला से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि नैशनल आमला के मैंबरों को फ़ज्र और इशा की नमाज़ मस्जिदें, सैंटर्ज़ में जा कर अदा करनी चाहिऐं। जो मैंबर नहीं आते तीन माह बाद उनकी हाज़िरी की रिपोर्ट करें। नैशनल आमला की हाज़िरी की रिपोर्ट सदर जमाअत, अमीर साहिब को दे दिया करें।

सैक्रेटरी तब्लीग़ ने निवेदन किया कि तब्लीग़ के लिए बजट बहुत कम होता है। जिसकी वजह से प्रोग्राम नहीं किए जा सकते। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तब्लीग़ के लिए मुनासिब बजट देना चाहिए। कुछा इशाअत इस्लाम के लिए ही दिया जाता है।

हुज़ूर अनवर ने जमाअत हॉलैंड के बजट का और विभिन्न मदों का विस्तार से जायज़ा लिया और फ़रमाया कि कुल बजट का दस प्रतिशत तब्लीग़ को दें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जिन विभागों की अच्छी माली हालत है वे अपने रोज़मर्रा के खर्च ख़ुद बर्दाश्त कर सकती हैं।

हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी तब्लीग़ को फ़रमाया पहले आप प्लान करें। कौन सा बड़ा ईवंट करना है। बिल बोर्डज़ हैं, लीफ़ लेट्स, ब्रोशर को बांटने का मन्सूबा है। अपने अमीर साहिब को तब्लीग़ का प्लान बना कर दें। फिर उस का निरन्तर follow up करें

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप अपनी शूरा मई में किया करें और समस्त विभाग अपने बजट पहले भिजवाया करें।

नैशनल मज्लिस आमला हॉलैंड की हुज़ूर अनवर के साथ यह मीटिंग सवा 12 बजे तक जारी रही। आख़िर पर मज्लिस आमला के मैंम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

नैशनल मज्लिस आमला अन्सारुल्लाह हॉलैंड की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मीटिंग

इस के बाद नैशनल मज्लिस आमला अन्सारुल्लाह हॉलैंड की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग शुरू हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई।

हुज़ूर अनवर ने क़ाइद उमूमी से पूछा कि आपकी मज्लिसें कितनी हैं और क्या सब नियमित रिपोर्टें भिजवाती हैं। और उन रिपोर्टें पर तबसरा भी करते हैं। इस पर क़ाइद उमूमी ने जवाब दिया कि हमारी 14 मज्लिसें हैं और सब नियमित रिपोर्टें भिजवाती हैं और हम अपना तबसरा, जवाब उनको भिजवाते हैं। एम्सटर्डम बैयतुल महमूद में हमने अपना ऑफ़िस बनाया हुआ है।

क़ाइद माल से हुज़ूर अनवर ने बजट के बारे में पूछा कि आपका बजट किस तरह बनता है। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि हम मज्लिसें के ज़ुउमा को फ़ार्म भिजवा कर बजट इकट्ठा करते हैं। फिर उस के द्वारा हमारा सामूहिक बजट तययार होता है। इस वक़्त 30 हज़ार यूरो हमारा सालाना बजट है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर हर नासिर अपनी आय के हिसाब से अन्सार का कुछा दे तो बजट बढ़ सकता है।

क़ाइद तर्बीयत से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि तर्बीयत का क्या प्लान है। कितने अन्सार बाजमाअत नमाज़ अदा करते हैं। अपनी नैशनल आमला के मेम्बरों को, इसी तरह अपनी मज्लिसें की आमला के मेम्बरों को बाजमाअत नमाज़ का आदी बनाएँ। इन सबको नमाज़ फ़ज्र और इशा पर अपने अपने सैंटर में आना चाहिए। कम से कम यह दो नमाज़ें तो बाजमाअत अदा हों। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपकी नैशनल आमला के मेम्बरों और स्थानीय मज्लिसें की आमला के मेम्बरों जहां-जहां भी सैंटर

हैं वहां फ़ज्र और इशा को आएं।

नायब सदर सफ़ दोम से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि कितने अन्सार साईकल चलाते हैं। इस पर नायब सदर सफ़ दोम ने निवेदन किया कि कुछ अन्सार साईकल चलाते हैं और कई अन्सार बहुत active हैं।

क़ाइद तजनीद ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए निवेदन किया कि इस वक़्त अन्सार की तजनीद 266 है।

क़ाइद ईसार ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर निवेदन किया कि अन्सार इयादत के लिए हस्पताल जाते हैं। old age हाऊसज़ में जाते हैं। इसी तरह हमने रक़म इकट्ठी करके अफ़्रीक़ा में दो कुँवें लगाए हैं। कुल 20 हज़ार यूरो इकट्ठा करके हमने ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट को दिया है

क़ाइद तर्बीयत नौ मुबाईन से सम्बोधित होते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अन्सारुल्लाह हर साल पचास नई बैअतें करवाए। पचास नए convert करें।

विभिन्न मज्लिसों के ज़उमा भी इस मीटिंग में मौजूद थे। हुज़ूर अनवर ने ज़ईम एम्सटर्डम सैंटर से नमाज़ों के बारे में पूछा कि क्या मस्जिद महमूद में अदा करते हैं और वहां कितनी हाज़िरी होती है। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि मस्जिद महमूद दूर है। लोगों के पास गाड़ी नहीं। आते हुए देर लगती है। कुछ सुस्ती भी है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया सुस्ती अधिक है, देर कम है

क़ाइद ज़हानत सेहत जिस्मानी से हुज़ूर अनवर ने पूछने फ़रमाया कि कितने लोग व्यायाम करते हैं। साईकल चलाते हैं। इस का जायज़ा होना चाहिए

क़ाइद तब्लीग़ से हुज़ूर अनवर ने पूछने फ़रमाया कि आपका तब्लीग़ का प्लान किया है। इस पर क़ाइद तब्लीग़ ने निवेदन किया कि हमारा तब्लीग़ का बजट अढ़ाई हज़ार यूरो है। एक हम पीस कान्फ्रैंस का आयोजन करते हैं चूँकि वह जमाअती सैंटर में होती है। इसलिए दो हज़ार यूरो में हो जाती है। इसके अतिरिक्त हमारा चैरिटी वाक का प्रोग्राम होता है। इसके द्वारा भी तब्लीग़ की राहें खुलती हैं

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो अन्सार के द्वारा बैअतें होती हैं तो आप जमाअती विभाग तर्बीयत नौ मुबाईन को बता देते हैं कि अन्सार के द्वारा यह यह बैअतें हुई हैं और उनके ज़िम्मे कर देते हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यहां अफ़्रीकनों की, अरबों की पाकेटस होंगी। उनका जायज़ा लें और वहां काम करें, तब्लीग़ करें।

मुआविन सदर अन्सारुल्लाह ने निवेदन किया कि हम गेस्ट हाऊस अन्सारुल्लाह के प्राजेक्ट पर काम कर रहे हैं

नायब सदर अव्वल ने निवेदन किया कि सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह जो काम मेरे ज़िम्मे करते हैं। मैं उसे सरअंजाम देता हूँ। उनकी गैरहाज़िरी में भी क़ायमक़ाम सदर के कर्तव्य अदा करता हूँ।

क़ाइद शिक्षा ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि हम साल में पाँच किताबें रखते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें "ब्रिटिश गर्वनमैंट और जिहाद" और "मसीह हिन्दुस्तान में" हो चुकी हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जो बड़ी किताबें हैं उनको विभिन्न हिस्सों में बांट करके रखा करें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। हकीकतुल वह्य को पाँच हिस्सों में बांट लें। अब आगे हकीकतुल वह्य के सौ पृष्ठ रख लें। अन्सार को पता चल जाएगा कि ख़वाब की, इलहाम की असल हक़ीक़त क्या है

आमला के एक मैंबर ने हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया कि लोग रिपोर्ट नहीं देते। जब उनसे नमाज़ों और दूसरे कामों की रिपोर्ट मांगी जाती है तो कहते हैं कि यह हमारा और ख़ुदा का मामला है। हम आपको रिपोर्ट नहीं देंगे

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ऐसे लोगों को समझाना चाहिए। उनको बताना चाहिए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह क्यों फ़रमाया कि जो लोग नमाज़ पर नहीं आते उनके घर जला दो। अगर यह ख़ुदा का मामला है तो फिर आप रहने देते और कुछ न कहते। क्यों कहा कि घर जला दो? अत: ऐसे लोगों को समझाएँ और उनके जायज़े लेते रहें। उमूमी जायज़ा ले लें। ऐसा फ़ार्म बना लें कि बस ख़ाने को टिक कर दिया करें। अधिक विस्तार में न जाएं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अपनी मज्लिसें के ज़उमा को नसीहत करें कि वो अन्सार को कहीं कि जो हमारे नमाज़ सैंटर हैं उनमें नमाज़ के लिए आया करें। ध्यान दिलाना ज़रूरी है

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो लोग यह समझते हैं कि हम से न जमाअती तौर पर और न अन्सारुल्लाह के तौर पर सम्पर्क करो। उन से पूछा जाए कि आप यहां किस लिए आए थे। आप जमाअती तौर पर ही आए थे। आप ऐसे लोगों के बारे में अपनी स्थानीय जमाअत के सदर को बता दें और अमीर साहिब को भी बताएं। फिर मर्कज़ लिख दें कि यह लोग कहते हैं कि हम से सम्पर्क न करो

क़ाइद तालीम ने निवेदन किया कि हम किताबें के अध्ययन के बाद पर्चे भिजवाते हैं। लेकिन अन्सार की तरफ़ से हल हो कर नहीं मिलते। 245 तजनीद को सामने रखते हुए हमने साल के दौरान चार पर्चे जारी किए और जवाब में सिर्फ 70 पर्चे आए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अर्थात लगभग एक हज़ार में से आए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अपने जुम्अ: को active करें। सबसे पहले अपनी नैशनल आमला को पकड़ें। फिर स्थानीय मज्लिसों की आमला हैं इन सब से पर्चे हल करवाएं। लोगों के पीछे पड़ने की बजाए ख़ुद घर से शुरू करें। अन्सार को कहीं कि पर्चा में सिर्फ अपना नाम लिख कर भिजवा दो कि किताब पढ़ ली है। आख़िर कई बार करने के बाद फिर पर्चा हल करके भिजवा ही देगा

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो अरबी भाषा जानते हैं और डच भाषा जानते हैं उनके लिए उनकी भाषा में पर्चा होना चाहिए और जो निसाब निर्धारित करना है वह भी उनकी अपनी भाषा में हो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह अस्सानी रज़ि ने फ़रमाया था। मुझे समझ नहीं आती कि चालीस साल का ख़ादिम active काम कर रहा होता है। जब 41वें साल में दाख़िल होता है। अन्सारुल्लाह में जाता है तो फिर उस जैसा सुस्त कोई नहीं होता। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया बस आपने हर एक को नसीहत करनी है। ख़ुदा तआला ने यही फ़रमाया है कि नसीहत करते चले जाओ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि क़ाइद माल और क़ाइद तर्बीयत मिलकर काम करें। जो सुस्त मस्जिद नहीं आते, कुछा नहीं देते तो दोनों को मिलकर कोशिश करनी चाहिए कि उनको जमाअत के लगभग करीब लाएंगे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अपने ज़ाती सम्पर्क भी बनाएँ। उनसे जा कर मिलें। उनको मालूम हो कि आप उनको मिलने जा रहे हैं। लेकिन कुछा इत्यादि के लिए नहीं बल्कि ज़ाती सम्पर्क और एक सम्बन्ध और दोस्ती के लिए मिले हैं। इस तरह यह लोग लगभग करीब आ जाऐंगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर कोई कुछा नहीं देता और अपने आपको अहमदी कहता है तो आप उस को अन्सार की तजनीद में से नहीं निकाल सकते। जब तक वह कहता है कि मैं अहमदी हूँ चाहे कुछा दे या न दे आपने उसे अपनी तजनीद में शामिल रखना है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उन के लिए प्लान बनाएँ। तर्बीयत लंबा प्रॉसॅस है। हमारा काम नसीहत करना है। जमाअत से दौड़ाना बड़ा आसान काम है। जमाअत में लाना मुश्किल काम है।

एक मैंबर ने निवेदन किया कि Rotterdam में चर्च की ख़रीद का मामला है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। आप अमीर साहिब को बताएं। मैंने कब रोका है

एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो शरह से चन्दा नहीं देते वे ओहदेदार नहीं बन सकते। कम शरह से जो देना चाहता है वे आज्ञा ले-ले। मैं आज्ञा दे देता हूँ। लेकिन फिर वह ओहदेदार नहीं बन सकता।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह बताना चाहिए कि कुछा tax नहीं है। ख़ुदा तआला के आदेशों में माली क़ुर्बानी का हुक्म है और यह ख़ुदा तआला की रज़ा की प्राप्ति के लिए है

नैशनल मज्लिस आमला अन्सारुल्लाह की यह मीटिंग दोपहर एक बजे ख़त्म हुई। आख़िर पर मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ नैशनल मज्लिस आमला ख़ुद्दाम अहमदिया हॉलैंड की मीटिंग

प्रोग्राम के अनुसार नैशनल मज्लिस आमला ख़ुद्दाम अहमदिया हॉलैंड की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मीटिंग शुरू हुई। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई

मोअतमिद ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि हमारी 10 मज्लिसों में 370 की तजनीद है। और हमारी सब मज्लिसें की तरफ़ से रिपोर्ट आती है।

मुहतमिम तर्बीयत से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या प्लान बनाया है। एक साल में क्या टार्गेट प्राप्त किया है। एक साल में कितने बाजमाअत नमाज़ी बनाए। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि 40 प्रतिशत ख़ुद्दाम एक नमाज़ बाजमाअत पढ़ते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अपनी नैशनल आमला और स्थानीय मज्लिसें आमला को बाजमाअत नमाज़ी बना दें तो बाक़ी सब ठीक हो जाएगा।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपकी नैशनल आमला और स्थानीय मज्लिसें आमला के मेम्बर 100 हो गए। यह सब बाजमाअत नमाज़ पढ़ने लग जाएं तो 100 हो जाऐंगे। इन 100 को देखकर फिर 50-60 और भी आ जाऐंगे। तब आप चालीस प्रतिशत के लगभग पहुँचेंगे। फिर धीरे-धीरे 50 प्रतिशत, 60 प्रतिशत तक हो जाऐंगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जितने भी मुबल्लग़ीन हैं सब ख़ुद्दाम को ध्यान दिलाएँ

कि नमाज़ों पर आया करें। ख़ुद्दाम से सम्बन्ध बढ़ाईं और उन्हें अपने लगभग शतप्रतिशत लाएंगे

मुहतमिम तब्लीग़ ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि हम साल में चार तब्लीग़ी कंपेन campaign) करते हैं। हमें एक बैअत भी प्राप्त हुई है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तब्लीग़ करना आपका काम है। दुआ करके तब्लीग़ करना है और थकना नहीं है। हिदायत देना ख़ुदा का काम है। आपका काम है कि हर एक को पैग़ाम पहुंचा दें। नन स्पैट के लोग भी जमाअत को नहीं जानते। शहर जा कर जमाअत का परिचय करवाएं ताकि लोगों को पता हो कि अहमदियत क्या है।

मुहतमिम तब्लीग़ ने बताया कि निसाब में कश्ती नूह रखी है। इस से पहले किताब "गर्वनमैंट अंग्रेज़ी और जिहाद" थी। इस का डच अनुवाद भी है। हम नियमित परीक्षा भी लेते हैं।

मुहतमिम उमूरे तलबा ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि हमारे छात्र की संख्या 134 है जिस में से 24 यूनीवर्सिटी में जाते हैं।

मुहतमिम सेहत जिस्मानी ने अपना प्रोग्राम पेश करते हुए बताया कि हम क्रिकेट लीग और फुटबॉल लीग का प्रोग्राम अपनी स्थानीय मज्लिसों में कर रहे हैं।

मुहतमिम ख़िदमत ख़लक़ ने निवेदन किया कि पीस कान्फ्रैंस का आयोजन करते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पीस कान्फ्रैंस के आयोजन मैं ख़िदमते ख़लक़ का क्या काम है। आपका काम है कि ग़रीबों की मदद करें, चैरिटी वाक आर्गेनाईज़ करें। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि हम ने चैरिटी वाक की थी और आठ हज़ार यूरो जमा किया था और रक़म HF को और चैरिटी वालों को दी थी

मुहासिब ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि हर तीन महीने में ऑडिट करते हैं और सारा हिसाब चैक करते हैं।

मुहतमिम सनअत तिजारत ने बताया कि हम ने चार प्राजेक्टस पर काम शुरू किया है। एक शिक्षा के लिए गाईड करना। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया शिक्षा के लिए गाईड करना उमूरे तलबा छात्र का काम है। आपका काम मुलाज़मत दिलवाना है। मुलाज़मत के अवसर उपलब्ध करना है।

मुहतमिम उमूमी ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि जलसा पर 50 ख़ुद्दाम सिक्योरिटी की डयूटी दे रहे थे। अब कुछ एक दिन के लिए वापस गए हैं। दोबारा आ जाऐंगे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जर्मनी से भी सिक्योरिटी डयूटी के लिए पाँच ख़ुद्दाम आए थे।

मुहतमिम तर्बीयत नौ मुबाईन ने बताया कि इस वक़्त 6 नौ मुबाईन हैं जो तर्बियत प्राप्त कर रहे हैं। उनमें से स्थानीय नौजवान क्रिस्चन बैकग्रांऊड से भी हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो स्थानीय डच लोग हैं उनको सूरह फ़ातिहा सिखाएँ और नमाज़ भी सिखाएँ। सबकी तर्बीयत करें और नियमित निज़ाम का हिस्सा बनाएँ।

मुहतमिम तजनीद ने बताया कि हमारी तजनीद डबल होने को है। हमारी आधी संख्या नए ख़ुद्दाम पर आधारित है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो पाकिस्तान से आए हैं उनको अपने सिस्टम में लेकर आएं। अपने करीब लाएं। नमाज़ों से, जुम्अ: से अटैच करें और करीब करें।

मुहतमिम तहरीक जदीद ने बताया कि13 हज़ार यूरो ख़ुद्दाम ने जमा करने हैं। साढ़े सात हज़ार टार्गेट पिछले साल था। अब इस साल उस को डबल करेंगे।

नायब सदर ने इशाअत विभाग के हवाला से बताया कि ख़ुद्दाम ने पिछले दो तीन सालों में आठ किताबें डच भाषा में प्रकाशित की हैं। उनमें दुआओं पर आधारित किताबें हैं।

मुहतमिम इत्फ़ाल ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि जो जमाअत की तजनीद है इस में 121 इत्फ़ाल हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो भी नया तिफ़्ल आता है आप का काम है कि इस को अपनी तजनीद में शामिल करें। आपकी तजनीद साथ के साथ पूर्ण होती रहनी चाहिए।

मुहतमिम वकार अमल ने बताया कि इस साल हम ने 371 वकार अमल करवाए हैं। अधिकतर वकार अमल मस्जिद बैयतुल अलअफ़ियत Almere की तामीर के हवाला से किए गए हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया एक तो वकार अमल आपने साल के शुरू में करवाए। मेयर भी आया था और प्रशंसा करके गया था।

मुहतमिम माल ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि हमारा सालाना बजट 44 हज़ार यूरो का है। 92 ऐसे ख़ुद्दाम हैं जो नहीं कमाते। 170 ख़ुद्दाम कमाने वाले हैं वे सही चन्दा अदा करते हैं

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो ख़ुद्दाम इस वक़्त कैंप में हैं। उनकी इन्कम कम है। वे जितना दे सकते हैं दे दें।

विभिन्न क़ाइद मज्लिसें भी इस मीटिंग में मौजूद थे। सब ही ने बारी बारी अपनी मज्लिसों की तजनीद के हवाला से बताया

सदर साहिब ख़ुद्दाम अहमदिया ने निवेदन किया कि पिछले कुछ समय से पांचों नमाज़ों की अदायगी की तरफ़ ध्यान दिला रहे हैं। 50 प्रतिशत ख़ुद्दाम बाजमाअत पढ़ते हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो कमज़ोर हैं उनको प्यार से समझाते रहें। नौजवान मुबल्लेग़ीन पीछे हटे हुए ख़ुद्दाम को करीब लाएंगे। जिन ख़ुद्दाम का उन कमज़ोर ख़ुद्दाम से दोस्ती का सम्बन्ध है तो वे ऐसे ख़ुद्दाम से सम्पर्क करके कबीर लाएं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया लोकल स्पोर्टस प्रोग्राम में इत्फ़ाल की हौसला अफ़ज़ाई किया करें। वे इस में शामिल हों। सिर्फ T.V पर ही न देखा करें बल्कि व्यवहार में खेलों के प्रोग्राम में शामिल हों।

मज्लिस आमला के एक मैंबर ने निवेदन किया कि हमारे घर से नमाज़ सैंटर 13 किलो मीटर दूर है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया एक नमाज़ वहां जा कर बाजमाअत पढ़ सकते हो। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मस्जिद के लिए एक बार जाते हुए पैट्रोल पर जो ख़र्च आता है वह रक़म पैट्रोल के लिए निर्धारित करो। महीना में तीस दिन और पाँच जुम्अ लगा लो। चालीस दिन का हिसाब रख लो तो यह 225 यूरो बनते हैं। ख़ुदा के लिए यह रक़म मस्जिद जाने के लिए निकालो। नमाज़ के लिए निकालो। बर्गर न खाओ। बीवी को कहो घर में खाना बनाओ। इस से कुछ रक़म बचेगी वह नमाज़ के लिए मस्जिद जाने के लिए ख़र्च करो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अपने ज़मीर से फ़तवा लो कि घर कितनी दूर है। मस्जिद, नमाज़ सैंटर न जाना और घर पर रह कर नमाज़ पढ़ना जायज़ है या नहीं

मुहतमिम तब्लीग़ को हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि हर मज्लिस को टार्गेट दें कि इतने प्रतिशत लोगों को जमाअत का परिचय पहुंच जाना चाहिए। कम से कम 50 प्रतिशत लोगों को पता हो कि जमाअत क्या चीज़ है।

हिसाबात रखने और ऑडिट के हवाला से सम्बन्धित विभाग ने हुज़ूर अनवर से रहनुमाई चाही कि ई मेल के द्वारा सदर साहिब ख़ुद्दाम अहमदिया की तरफ़ से खर्चों की मंज़ूरी या किसी बिल की मंज़ूरी मिल जाती है। लेकिन यह सिर्फ एक पैग़ाम की शक्ल में होता है। इस पर सदर साहिब का नाम तो मौजूद होता है लेकिन दस्तख़त नहीं होते। जबकि ऑडिट के हिसाब से दस्तख़त होने ज़रूरी हैं। इस पर हुज़ूर अनवर फ़रमाया: दस्तख़त होने चाहिऐं। यह ज़रूरी है। एक मैंबर ने सवाल किया कि कई बार स्कूल में बच्चों की बर्थ डे करते हैं और दूसरे बच्चों को कहते हैं कि केक लाओ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर स्कूल वाले कहते हैं तो केक ले जाओ। कोई शरीयत का मस्ला नहीं है।

आप अपने बच्चों को घर में बताएं कि आज स्कूल में इस तरह हुआ है। इस अवसर पर तुम ग़रीबों के लिए आज चन्दा दो। कुछ रक़म चैरिटी डालो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपके अपने घर में तीन चार बच्चे हैं यह बच्चे आपस में बैठ कर केक खा लें तो इस में कोई हर्ज नहीं। असल यह है कि ख़ास प्रबन्ध करके दूसरों को ना बुलाऐं। तोहफ़े न दें, फंक्शन न हो।

एक मैंबर ने यह सवाल किया कि अगर कोई दूसरी ग़ैरमुस्लिम फ़ैमिली अपने बच्चे के प्रोग्राम पर बुला रही है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तो चले जाओ। उनका रिवाज है। बच्चे को कोई तोहफ़ा देना है तो दे दो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर स्कूल में, क्लास में कोई ऐसा प्रोग्राम है तो वहां बताना चाहिए कि इस अवसर पर ग़रीबों को चन्दा देना चाहिए। बहुत से ग़रीब लोग ऐसे हैं जिनके पास पीने का पानी नहीं है। शिक्षा नहीं है। हम चाहते हैं कि इन के लिए चैरिटी में कुछ दें ताकि उनकी मदद हो सके। इस अवसर पर दुआ करें कि हम समाज का अच्छा हिस्सा बनें। सेवा करने वाले हों।

एक मैंबर ने निवेदन किया कि एक सिख दोस्त की बच्ची की उम्र छ: माह हुई थी इस ने खाने पर बुलाया। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। जा कर ख़ा लिया करो, कोई हर्ज नहीं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप किसी के घर गए हैं और वहां ख़त्म हो रहा है और ख़त्म का खाना पका या हुआ है। आप ख़त्म में तो शामिल नहीं होंगे हाँ जो खाना है वह खाना समझ कर ख़ा लो।

चन्दा के बारे में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हुक्म यह है कि चन्दा पवित्र माल से दो। चन्दा tax नहीं है। बल्कि यह माली क़ुर्बानी ख़ुदा तआला की रज़ा के लिए है और इसलिए है ताकि तुम्हारे माल में बरकत पड़े। जो माल ग़लत तरीक़ से कमाया जाए या नाजायज़ तौर पर प्राप्त किया जाए, इस पर चन्दा नहीं लेना।

नैशनल मज्लिस आमला ख़ुद्दाम अहमदिया की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाक़ात 1 बजकर 50 मिनट पर ख़त्म हुई। आख़िर पर आमला के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। 2 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ नेशनल मज्लिस आमला लज्ना इमाउल्लाह हॉलैंड की मीटिंग

प्रोग्राम के अनुसार 5 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद बैयतुन्नूर तशरीफ़ लाए और नैशनल मज्लिस आमला लज्ना इमाउल्लाह हॉलैंड की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग शुरू हुई। इस मीटिंग में आमला की मेम्बरात के साथ क्षेत्रीय सदर और लोकल मज्लिसों की सदर भी शामिल हुईं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई

हुज़ूर अनवर ने जनरल सैक्रेटरी साहिबा से पूछा कि लज्ना की कितनी मज्लिसें हैं। कितनी मज्लिसें रिपोर्टें भिजवाती हैं और उन रिपोर्टें पर फीडबैक कौन देता है। इस पर जनरल सैक्रेटरी ने निवेदन किया कि कुल 17 मज्लिसें हैं और अपनी रिपोर्टें भिजवाती हैं और उन पर नैशनल सदर साहिबा फीडबैक देती हैं। इस पर नैशनल सदर लज्ना ने बताया कि वह नैशनल आमला को फीडबैक देती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि नैशनल सदर लज्ना भी लोकल मज्लिसों को फीडबैक दिया करें ताकि उनको पता हो कि नैशनल सदर का भी सम्पर्क है

अस्सिटैंट जनरल सैक्रेटरी ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि वह नैशनल जनरल सैक्रेटरी की मदद करती हैं।

हुज़ूर अनवर ने नायब सदर अव्वल से उनकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा, जिस पर महोदया ने बताया कि उनके पास सैक्रेटरी मुहासिबा माल की ज़िम्मेदारी भी है। हुज़ूर अनवर ने ऑडिट करने के हवाला से पूछा जिस पर महोदया ने निवेदन किया कि वह सालाना ऑडिट करती हैं।

नायब सदर दोयम ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि वह सैक्रेटरी माल भी हैं। हुज़ूर अनवर ने चन्दा देने वालों और कमाने वाली औरतों के बारे में पूछा, जिस पर महोदया ने बताया 411 चन्दा देने वाली हैं। जिनमें से 29 कमाने वाली हैं,जो एक प्रतिशत के हिसाब से चन्दा देती हैं

इस के बाद मुआविन सदर लज्ना मैनजमंट ने अपने ज़िम्मे ज़िम्मेदारी के बारे में बताया।

निगरान वाक़फ़ाते नौ से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि कितनी वाकिफ़ात नौ हैं? महोदया ने बताया कि उनकी संख्या 83 है। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने 15 साल से बड़ी वाकिफ़ात के बारे में पूछा।

माअना सदर ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि वह सैक्रेटरी सुलतानुल क़लम और सोशल मीडिया हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने पूछा कि सोशल मीडिया में, नैशनल और लोकल अख़बारों में कितने आर्टीकल लिखे हैं और कितने तब्लीग़ी आर्टीकल लिखे हैं। इस पर सैक्रेटरी साहिबा ने बताया कि हम ने अपनी वेबसाइट लॉन्च की है और हम ने बुर्क़ा पर लगने वाली पाबंदी के बारे में आर्टीकल डाला है। जिस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया दूसरों की वेबसाइट पर भी कमंट डाल दिया करें। आजकल जो इस्लाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ चीज़ें छपती हैं उन पर कमंट डाला करें।

मआवना सदर बराए रिश्ता नाता और वसीयत से हुज़ूर अनवर ने औरतों की वसीयत के हवाला से पूछा जिस पर महोदया ने निवेदन किया 225 लज्ना की वसीयत है।

सैक्रेटरी तर्बीयत ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर अपना प्रोग्राम बताया। हुज़ूर अनवर ने किताब घरेलू समस्याएं, सोशल मीडिया और पर्दा के बारे में नई छपने वाली किताबों का डच अनुवाद करने की हिदायत फ़रमाई।

हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी अमूरे तुलबा से उनके कामों के बारे में पूछा और फ़रमाया कि क्या सेमिनारों में दिलचस्पी लेती हैं? जिस पर सैक्रेटरी साहिबा ने निवेदन किया कि अभी क्लासे हो रही हैं। 70 प्रतिशत छात्राएं हिस्सा भी लेती हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी नास्रात से नास्रात की संख्या और तर्बीयत के प्रोग्राम के बारे में पूछा। जिस पर सैक्रेटरी साहिबा ने अपने प्रोग्राम की रिपोर्ट पेश की और बताया कि नास्रात की संख्या 110 है। महोदया ने निवेदन किया कि पाकिस्तान से बहुत सी बच्चियां आई हैं। भाषा और कुछ दूसरे कारणों के आधार पर यहां की बच्चियों के साथ integrate होने में मुश्किल पेश आ रही है

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। नई आने वाली बच्चियां भाषा तो सीख रही हैं। यह मसला होना नहीं चाहिए। यहां रहने वाली बच्चियों के साथ दोस्ती करें।

सैक्रेटरी साहिबा ख़िदमत ख़लक़ ने अपनी रिपोर्ट पेश की। सदर साहिबा ने बताया कि हुज़ूर अनवर की आज्ञा से हमने ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट से सम्पर्क किया है। उन्होंने हमें एवरीकोस्ट में बनने वाले हस्पताल के बेडज़ के लिए अतीया उपलब्ध करने की हिदायत की है। हुज़ूर अनवर के और अधिक पूछने पर सदर साहिबा ने बताया कि हमने ह्यूमैनिटी फ़रस्ट हॉलैंड के इंचार्ज से सम्पर्क किया था। उन्होंने हमें समस्त मालूमात दी हैं।

सैक्रेटरी शिक्षा की रिपोर्ट पर हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या नैशनल आमला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का अध्ययन करती है? जिस पर सैक्रेटरी शिक्षा ने निवेदन किया कि अध्ययन करती है। परीक्षा के हवाला से निवेदन किया कि 156 लज्ना की मैंबर्ज़ परीक्षा देती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि नैशनल आमला भी परीक्षा दिया करे।

सैक्रेटरी तजनीद से हुज़ूर अनवर ने तजनीद के हवाला से पूछा कि कितनी तजनीद है और लोकल सदरों से तजनीद किस तरह लेती हैं। सैक्रेटरी ने निवेदन किया कि कुल तजनीद 475 है। मासिक लोकल रिपोर्टें से तजनीद अपडेट होती रहती है

सैक्रेटरी तब्लीग़ ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि इस साल दो बैअतें हुई हैं और पिछले तीन सालों में सात बैअतें हुई हैं।

सैक्रेटरी इशाअत डच और सैक्रेटरी इशाअत उर्दू ने अपना परिचय पेश किया। जिस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया सैक्रेटरी इशाअत एक ही हो, दो की क्या ज़रूरत है। वह अपनी मआवना रख सकती हैं। इस पर सदर लज्ना ने निवेदन किया कि हुज़ूर की आज्ञा से दो सेक्रटरयान बनाई गई हैं।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर सैक्रेटरी इशाअत डच ने बताया कि रिसाला प्रकाशित होता है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यूके में एक रिसाला "मर्यम" वक़्फ़ नौ बच्चियों के लिए प्रकाशित होता है। वह स्थायी लगवाएं। इस रिसाले में से निबन्ध अपने रिसाला में डाला करें। अच्छे तर्तीब दिए होते हैं।

सैक्रेटरी तर्बीयत नौ-मुबाइयात ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि सात नौ-मुबाइयात की साप्ताहिक क्लासे हो रही हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि लोकल डच लोगों की भी बैअत करवाएं।

सैक्रेटरी सनअत दस्तकारी ने अपनी रिपोर्ट पेश की। हुज़ूर अनवर के पूछने पर महोदया ने अपनी आय बताई।

सैक्रेटरी सेहत जिस्मानी से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि ख़ुद खेलती हैं। नियमित खेलने वाली कितनी हैं? महोदया ने निवेदन किया कि यूरोपियन वाली बाल टूर्नामैंट के लिए जाते रहे हैं।

सैक्रेटरी ज़याफ़त से उनके काम और बजट के बारे में हुज़ूर अनवर ने पूछा। महोदया ने अपने बजट के बारे में बताया।

सैक्रेटरी तहरीक जदीद और वक़्फ़ जदीद ने अपनी रिपोर्ट पेश की। हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि 7 से 15 साल की नास्रात को शामिल करें।

इसके बाद क्षेत्रीय और लोकल सदरात ने बारी बारी अपने काम के बारे में बताया। हुज़ूर अनवर ने सबसे उनकी मज्लिसें की तजनीद पूछी।

एक लोकल सदर साहिबा ने सवाल किया कि आजकल की दुनिया में मर्द और औरत का काम करना ज़रूरी है और कुछ लज्ना मैंबर्ज़ काम के कारण से जमाअत के प्रोग्रामों पर नहीं आ सकतीं। उनके बारे में हुज़ूर अनवर फ़रमाएं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह तो सच है कि आजकल मर्द और औरतों काम किए बिना गुज़ारा नहीं कर सकते। यह तर्बीयत विभाग का काम है कि उनको याद दिलाते रहें। मेरे ख़ुत्बों के द्वारा लज्ना को बच्चों की अच्छी परवरिश करनी चाहिए। अगर माताएं नेक होंगी और उनमें दुनियावी इच्छाए नहीं होंगी तो वे अपनी ज़िम्मेदारी समझेंगी। उदाहरण के तौर पर अमरीका में कुछ लज्ना हैं जो काम भी करती हैं और उनकी तर्बीयत का स्तर भी अच्छा है। काम करने की आज्ञा है अगर मजबूरी है और पति की आय इतनी अच्छी नहीं है लेकिन आपको अपने अह्द के महत्तव को समझना चाहिए। फिर उस अह्द को दोहराने का क्या लाभ?

(शेष.....)

☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** Qadian

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 14 May 2020 Issue No.20

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

ज़कात एक प्रमुख फ़र्ज़ है

इस की अदायगी की तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएं

रमज़ानुल मुबारक का बरकतों वाला महीना शुरू हो चुका है। इस बरकत वाले महीना में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक उपदेश के अनुसार जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नुम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं। क्योंकि यही वह बरकतों वाला महीना है जिसमें मोमिनों को ज़्यादा से ज़्यादा नेक कामों के करने का मौक़ा मिलता है जिसके द्वारा वह अल्लाह तआला के क़ुरब को प्राप्त करके बेशुमार रहमतों और बरकतों के वारिस बनते हैं। और यही वह बरकतों वाला महीना है जिसमें हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कसरत से न केवल इबादत करते थे बल्कि प्रचुरता से अपने मालों को अल्लाह तआला के रास्ता में ख़र्च किया करते थे। अत: हम में से हर अहमदी मुस्लमान का यह फ़र्ज़ है कि हम आपके आदर्श पर चलते हुए न सिर्फ अपनी इबादतों में तेज़ी पैदा करें बल्कि वहीं अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च में भी अपना क़दम बढ़ाएं।

जमाअत के लोगों को ज्ञान है कि क़ुरआन करीम में नमाज़ के साथ साथ ज़कात का हुक्म है इस लिए समस्त निसाब वाले मर्दों तथा औरतों से निवेदन है कि वे इस अहम कर्तव्य को पूरा करने की तरफ ध्यान फरमाएं।

ज़कात इस्लाम का एक बुनियादी रुकन है जो प्रत्येक निसाब वाले पर फ़र्ज़ है। इस के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

" हे वे समस्त लोगो जो अपने अपने आप को मेरी जमाअत में शामिल करते हो आसमान पर तुम उस वक़्त मेरी जमाअत शामिल किए जाओगे जब सचमुच तक़्वा की राहों पर क़दम मारोगे। अत: अपनी पांचों समय की नमाज़ों को ऐसे ख़ौफ़ और हुज़ूर से अदा करो कि मानो तुम ख़ुदा तआला को देखते हो और अपने रोज़ों को ख़ुदा के लिए सच्चाई के साथ पूरे करो। प्रत्येक जो ज़कात के योग्य है वे ज़कात दे।"

(कश्ती नूह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 15)

ज़ेवरों की ज़कात के बारे में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

"जो ज़ेवर पहना जाए और कभी कभी ग़रीब औरतों को इस्तिमाल के लिए दिया जाए,कइयों का उस के बारे में यह फ़तवा है कि इस की कुछ ज़कात नहीं। और जो ज़ेवर पहना जाए और दूसरों को इस्तिमाल के लिए न दिया जाए इस में ज़कात देना बेहतर है कि वह अपने नफ़्स के लिए प्रयोग योग्य होता है। इसी पर हमारे घर में अमल करते हैं और हर साल के बाद अपनी मौजूदा ज़ेवर की ज़कात हैं और जो ज़ेवर रुपया की तरह जमा रखा जाए उस की ज़कात में किसी को भी मतभेद नहीं।"

(अलहकम17 नवम्बर 1905 ई ,पृष्ठ 11)

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि "याद रखना चाहिए कि यह टैक्स जिसे ज़कात कहते हैं आय पर नहीं है बल्कि सरमाया और लाभ सबको मिलाकर इस पर लगाया जाता है और इस तरह अढ़ाई प्रतिशत वास्तव में कई बार लाभ का 50 प्रतिशत बन जाता है।"

(अहमदियत अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम ,अन्वारुल उलूम ,भाग 8 पृष्ठ 306)

ज़ेवरों और नक़द रुपए के निसाब ज़कात के बारे में सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया है कि" चांदी के लिए चांदी वाला और सोने के लिए सोने वाला वही निसाब होगा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक ज़माना में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद प्रचलित फ़रमाया था और जहां तक नक़द रुपए के लिए निसाब ज़कात की बात है तो इस वक़्त दुनिया की अधिकतर सोने को ही स्तर अपनाए हुए है इसलिए नक़द रुपए की ज़कात में भी सोने को ही स्तर समझा जाएगा।"

(मकतूब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनाम सदर साहिब मज्लिस इफ्ता)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चांदी के लिए साढ़े बावन (52.5) तौला और सोने के लिए साढ़े सात(7.5)तौला निसाब निर्धारित फ़रमाया है जिसके पास साढ़े बावन (52.5) तौला 612 ग्राम चांदी मौजूद है और इस पर एक साल का समय गुज़र जाए तो इस पर1/40 हिस्सा अर्थात अढ़ाई प्रतिशत ज़कात देना फ़र्ज़ है।

इसी तरह जिसके पास साढ़े सात (7.5) तौला 87 ग्राम सोना मौजूद हो या उसके बराबर नक़द रक़म मौजूद हो और इस पर एक साल का समय गुज़र जाए इस पर भी शरह के अनुसार 1/40 हिस्सा अर्थात अढ़ाई प्रतिशत ज़कात देना फ़र्ज़ है

ज़कात की समस्त वसूल की गई रक़म मर्कज़ भिजवानी ज़रूरी है

अल्लाह तआला हम सबको इस प्रमुख फ़र्ज़ को अदा करने की तौफ़ीक़ दे और जमाअत के समस्त लोगों के मालों तथा नफ़ूस में बरकत प्रदान करे। आमीन।

(नाज़िर बैयतुल माल कादियान)

☆ ☆

व्यक्तिगत सम्बन्ध

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला अन्हों फरमाते हैं कि

"कौन सा डिक्टेटर है जो अपने देश की प्रजा से व्यक्तिगत सम्बन्ध भी रखता हो। समय के ख़लीफ़ा का तो दुनिया में फैली हुई हर क़ौम और हर नस्ल के अहमदी से व्यक्तिगत सम्बन्ध है। उनके व्यक्तिगत पत्र आते हैं जिनमें उनके व्यक्तिगत मामलों का वर्णन होता है। इन रोज़ाना के पत्रों को ही अगर देखें तो दुनिया वालों के लिए एक यह अविश्वसनीय बात है। यह ख़िलाफ़त ही है जो दुनिया में बसने वाले हर अहमदी की तकलीफ़ पर ध्यान देती है। उनके लिए समय का ख़लीफ़ दुआ करता है। कौन सा दुनियावी लीडर है जो बीमारों के लिए दुआएं भी करता हो। कौन सा लीडर है जो अपनी क़ौम की बच्चियों के रिश्तों के लिए बेचैन और उनके लिए दुआ करता हो। कौन सा लीडर है जिसको बच्चों की शिक्षा की फ़िक्र हो। हुकूमत बेशक शैक्षिक संस्थाएं भी खोलती है। सेहत के विभाग भी खोलती है। शिक्षा तो उपलब्ध करती है लेकिन बच्चों की शिक्षा जो इस दुनिया में फैले हुए हैं उनकी फ़िक्र सिर्फ आज समय के ख़लीफ़ा को है। जमाअत अहमदिया के लोग ही वे ख़ुश-क़िस्मत हैं जिनकी फ़िक्र समय के ख़लीफ़ा को रहती है कि वह शिक्षा प्राप्त करें। उनकी सेहत की फ़िक्र समय के ख़लीफ़ा को रहती है। रिश्तों की समस्याएं हैं। अत: कि कोई मसला भी दुनिया में फैले हुए अहमदियों का चाहे वह व्यक्तिगत हो या जमाअत का ऐसा नहीं जिस पर समय के ख़लीफ़ा की नज़र न हो और इस के हल के लिए वह व्यावहारिक कोशिश के अतिरिक्त अल्लाह तआला के समक्ष झुकता न हो। इस से दुआएं न मांगता हो। मैं भी और मेरे से पहले खलीफ़ा भी यही कुछ करते रहे। मैंने एक नक्शा खींचा है बेशुमार कामों का जो समय के ख़लीफ़ा के सपुर्द ख़ुदा तआला ने किए हैं और उन्हें उसने करना है। दुनिया का कोई देश नहीं जहां रात सोने से पहले कल्पना की आंश से मैं न पहुंचता हूँ और उनके लिए सोते वक़्त भी और जागते वक़्त भी दुआ न हो।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 6 जून 2014 ई)

☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad